परी पोवारी

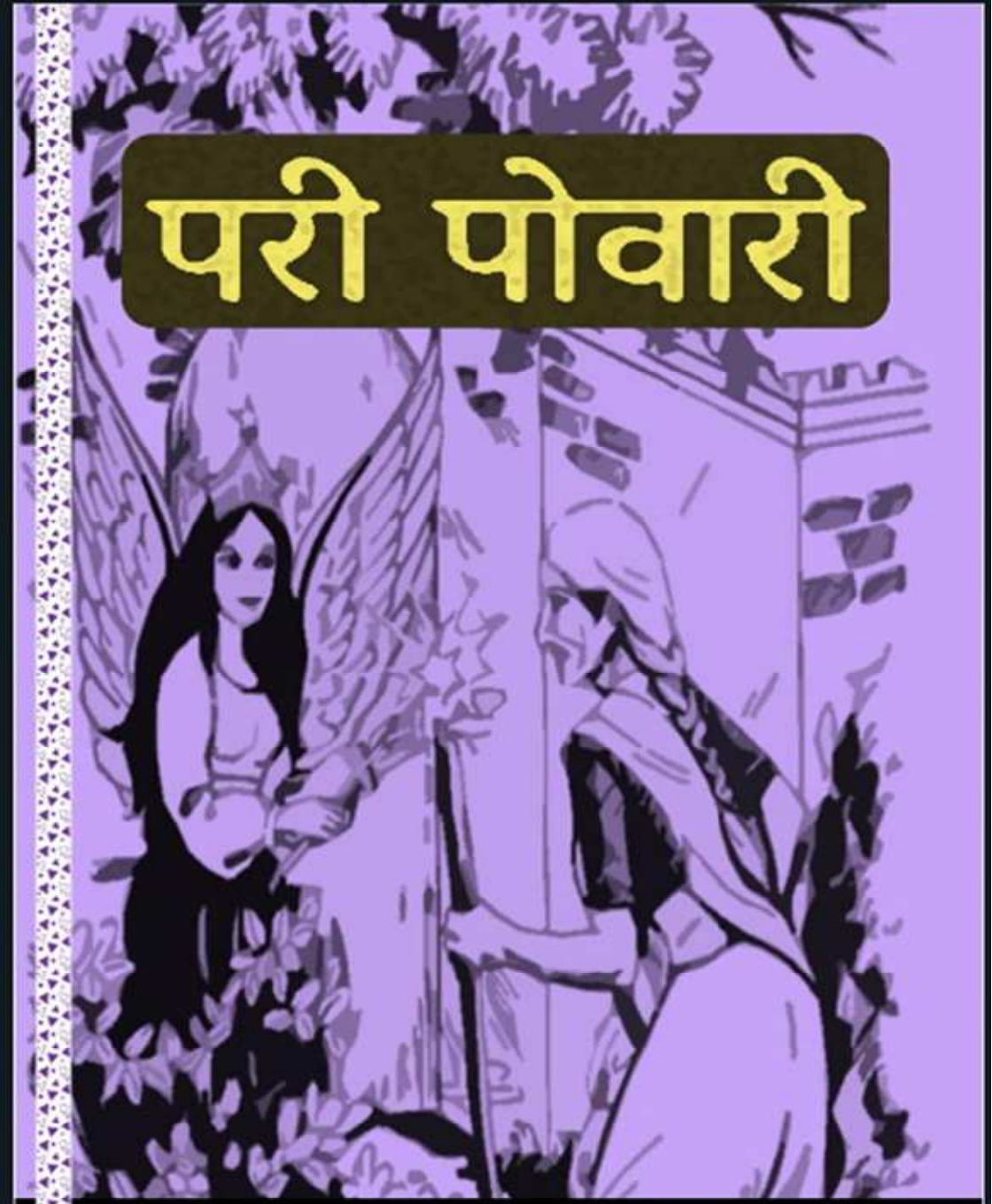

डॉ. प्रल्हाद हरिणखेड़े "प्रहरी"

परी पोवारी

(काव्यसंग्रह)

कवि- डॉ. प्रल्हाद हरिणखेड़े 'प्रहरी'

प्रकाशक :
इंजी. गोवर्धन बिसेन 'गोकुल'
गायत्रीकुंज, गजानन कॉलोनी, कुडवा, गोंदिया – ४४१६१४

परी पोवारी (काव्यसंग्रह)

Pari Powari (Collection of Poems)

कवि:
डॉ. प्रल्हाद हरिणखेडे 'प्रहरी'
सुखदेवटोली (डोंगरगांव) तह.जि. गोंदिया (महाराष्ट्र),
हा.मु. ३०५, साई ऑरा, प्लॉट क्र. ३३, सेक्टर-१७
उलवे, नवी मुंबई - ४१०२०६
फोन: +९१ ९३०७७१८४८५

© सर्वाधिकार :
सौ. कार्तिकी प्रल्हाद हरिणखेडे इनको स्वाधीन

प्रकाशक :
इंजी. गोवर्धन बिसेन 'गोकुल'
गायत्रीकुंज, गजानन कॉलोनी, कुडवा, गोंदिया – ४४१६१४
ई-मेल: govardhangokul.2509@gmail.com
फोन: +९१ ९४२२८३२९४१

मुद्रण:
श्री हरीश जोगळेकर,
वेदिका ग्राफिक्स, शॉप क्र. १४४ विंग क्र. ४ रजत संकुल,
गणेशपेठ, नागपूर – ४४००१८

मुखपृष्ठ:
इंजी. महेन पटले, नागपूर

प्रथमावृत्ती : ३ फरवरी २०२४

मुल्य : ₹१८५/-

प्रति - १००

ISBN – 978-93-3400-476-2

अर्पण पत्रिका...

सदगुरु कबीर साहेब को चरण मा अर्पण

मनोगत.....

प्रिय वाचकगन,

वाग्देवी, गडकालीका अना महाकालला आपलो आराध्य माननेवालो मालवालक आयेव पोवार समाज बैनगंगा नदी को थळीपर बस के समृद्ध भयेव. येनं समाज को जीवनयापन अना समृद्धी को मुख्य साधन कास्तकारी आय. येनं क्षत्रिय समाज की आपली एक स्वतंत्र बोली, संस्कृती अना रीतिरिवाज संग कष्टाळू वृत्तीलक यव समाज सुखी, संपन्न अना तालेवर बनेव. पोवार समाज को सामाजिक, सांस्कृतिक अना राजकीय प्रभाव पोवार बहुल गावमा अना वहाको अन्य समाजपर भी पडेव. १९७०-८० को बाद बढतो जागतिकीकरण को चलते, पोवार समाज भी शिक्षन क्षेत्रमा प्रगती करन बसेव. रोजीरोटी, नोकरीपानी, नविन रिस्तासंबध इन को कारनलक यव समाज देश को अन्य क्षेत्रमा अना विदेशमा भी पोहचेव. असो कोणतोच क्षेत्र आता बाकी नाहाय जहा पोवार समाजनं झंडा नही गाडी रहेस. हर हुंन्नरी पोवार एकांगं जहा विश्वमा छाय रही से वहा दुसरो आंगं खुद की मायबोली पोवारीलक दुराय भी रही से. शरम, दुर्लक्ष, काम की व्याप्तीमा समय को अभाव, परिवारलक दुहूर, दुसरो भाषा को प्रभुत्व अना आवश्यकता इत्यादी अनेक कारनलक पोवारी बोलीला वू दूराय रही से, असो कवनो गलत नही होनको असो मोरो वैयक्तिक बिचार से.

पर आता विविध संघटनइन को जरियालक सामाजिक जागृती बढेवलक अना लिखित साहित्य अनेक माध्यमइनमा आयेलक आपलो पोवारी बोली को प्रति आस्था बढ रही से या बात समाजलाई जमा की बाजू आय. दुही, जुनी अना नवीन पिढीमा मायबोली को प्रति प्रकर्ष देखके आपला पूर्वज/ पुरखा भी स्वर्गमा खुश होत रहेत. उनला भी लगत रहे का आपलो बिखरेव समाज आता एकसंध होय रही से, एक मुठ्ठी बन रही से. आपलो समाज की याच एकता आपली अना पोवारी बोली की ताकत आय. पोवारी को उत्कर्षलाई हिरदालक प्रतिज्ञाबद्ध होनो बहुत जरूरी से.

जेला आमी मायबोली कसेजन वा पोवारी बोली मधुर से, परी वानी सुंदर से. एक जमानोमा पोवारी बोली को दबदबा होतो. दुसरो आडीजात वाला भी पोवारी बोली बोलत होता. या बोली पोवार समाज अना पोवार की पयचान आय. बोलीलकाच कोनतो भी समाज को अस्तित्व टिकेव रव्हं से. परंतु पोवारनं आपलो बोलीला हेंगली अना तुच्छ समजन की भूल करीस. पोवारच पोवारी बोली बोलनला लाजन बस्या जेको नकारात्मक असर पूरो समाजपर, खासकर युवा वर्गपर जास्त दिसन बसेव. येकोलक या परी वानी पोवारी मायबोली उपेक्षित भय गयी. वोनं मायकन देखनेवालोइन की संख्या रोजको रोज कम भयी. या परी पोवारी मायबोली पोवारला हाक मार रही से. वको बचाव मनजे आपलो अस्तित्व को टिकाव आय. मुहून सब पोवारजनला परी पोवारी मायबोलीला बचावन अना संवर्धन की बिनती से.

येनं परी पोवारी को हाकनच मोला "परी पोवारी" यव काव्यसंग्रह प्रकाशित करन की प्रेरना देयीस. येनं काव्यसंग्रहमा सिरीफ पोवारी बोली संबंधीच रचना सेत. ये रचना पोवारी मायबोली को उत्थानमा रवा को दाना येतरो भी योगदान देयेत तं मोरो प्रयास काही अंशमा तरी सफल भयेंव असो मोला लगे. ये रचना तुमला कसी लगी येको प्रतिक्रिया की अपेक्षा से.

सहृदय धन्यवाद!

*- **डॉ. प्रल्हाद हरिनखेड़े "प्रहरी"***
डोंगरगाव, ता. जि. गोंदिया
हाल मुक्काम: उलवे, नवी मुंबई

प्रकाशक का दुय शब्द...

- इंजी. गोवर्धन बिसेन 'गोकुल'
प्रकाशक

कवि डॉ. प्रल्हाद हरिणखेडे 'प्रहरी' हे अष्टपैलू व्यक्तित्व का धनी सेत. इनला साक्षात माय सरस्वती की कृपा से. इनको लेखनी लका सतत पोवारी, मराठी अना हिंदी मा काव्य सृजन होत रव्हं से. इनको संपर्क मोला एक पोवारी उत्कर्ष समुह मा भयेव. इनको सृजन कार्य बहुत प्रभावीत रव्हत होतो. इनको सृजन कार्य लका मी आकर्षित भयेव अना समुह मा सृजन करता करता हे मोरा आभासी संगी बन गया. इनको सहकार्य लका मी भी आपली कविता चांगलो बनावन लगेव. इनको परिचय अना कार्य पर उनला मोरी अष्टाक्षरी कविता सर्मपित करीसेव.... कविता को शीर्षक से .... 'वारकरी पोवारी को'

वारकरी पोवारीको
नाव "प्रहरी" रतन।
कथा कविता लिखसे
बोली पोवारी जतन ॥१॥

भेटी जीवन संगीनी
वला डिलेश्वरी बाई।
पुत्र सात्विक भयेव
कुल बढ़ावन लाई ॥३॥

वला शिक्षकी पेशाको
मोठो सार्थ अभिमान।
शुध्द आचरण संग
करसेती शिक्षादान ॥५॥

रघुनाथजीको टुरा
वकी रायाबाई माय।
जन्म सुखदेवटोली
डोंगरगांवको आय ॥२॥

शिक्षणमा सेट वरी
ओनं बढ़ाईस कद।
नौकरीमा प्राणीशास्त्र
अधिव्याख्याताको पद ॥४॥

सोळा पत्रिकामा वनं
शोध निबंध लिखीस।
पुरुस्कृत होयशानी
स्वप्न सुंदर देखीस ॥६॥

बारा नाटक लिखीस
सांस्कृतिक खेललाई।
'प्रितप्रेम' अना दुय
श्रेष्ठ पुरस्कृत भयी ॥७॥

कोरोनाको समयमा
सवा तीनसौ कविता।
हिंदी मराठी पोवारी
बनी ज्ञानकी सरिता ॥९॥

छंद पहाड़ी चढ़नो
निसर्गको निरिक्षण।
हार्मोनिका, ढोलक ना
गीत गायन लेखन ॥११॥

माय गडकाली संग
वाग्देवीको से आशिष।
लेखनीलं समाजमा
उंचो उठे वको शिष ॥१३॥

हिंदी मराठीका काव्य
'स्वर संस्कृती' 'अबोली'।
संग पोवारी कविता
भरी साहित्यकी ढोली ॥८॥

परी पोवारी, पंतूना
भयी आता प्रकाशित।
होये पोवार समाज
बाचकन आल्हादित ॥१०॥

सत्यनाम, कबीरका
बिचारको से आधार।
उचो उठनलाई भेट्या
मायबाप का संस्कार ॥१२॥

शब्द रजनी, पोवारी
गृप काव्य परिक्षण।
शिक्षालाई रवसेती
बहुमोल मुल्यांकन ॥१४॥

कथा कविता इनकी
ठाम सांग गोवर्धन।
मायबोली पोवारीको
करे खरो संवर्धन ॥१५॥

डॉ. प्रल्हाद हरिणखेडे इनका 'परी पोवारी' अना 'पंतूना' हे दुय काव्यसंग्रह अखिल भारतीय पोवार (पंवार) महासंघ को दुसरो अधिवेशन मा पोवारी साहित्य सम्मेलन को बेरा तुमसर मा दि. ३ फरवरी २०२४ ला मोरो माध्यम लका प्रकाशित होय रह्या सेती येकी मोला बहुत खुशी होय होय रयी से. कविनं काही पोवारी समूह को माध्यम लका आया विषयपर मनमा आया भाव स्वानुभव अना कल्पना को आधारपर शब्दरूपी फूल लका गुफस्यान कवितारूपी ८५ हार को समावेश 'परी

पोवारी' येनं काव्यसंग्रह मा करी सेन. कविनं प्रस्तुत काव्यसंग्रह आपलो सदगुरु कबीर साहेब को श्रीचरण मा अर्पण करस्यान काव्य रसिकसाती उपलब्ध कर देयी सेस. रसिक पाठकगण येनं काव्यसंग्रह को रसपान करस्यान आनंद लंयेत अशी मी आशा बाळगूसु.

'परी पोवारी' येनं काव्यसंग्रह को ***आय.एस.बी.एन.*** पासून पुस्तक को प्रकाशन वरी की जवाबदारी कवि डॉ. प्रल्हाद हरिणखेडे 'प्रहरी' इननं मोरोपर सोपीतीन. मायबोली पोवारी को संवर्धनासाती मोरोकनलका खारूताई को हिस्सा येनं पुस्तक प्रकाशन को माध्यमलका उचलनसाती मौका देईन मुहून मी कवि डॉ. प्रल्हाद हरिणखेडे 'प्रहरी' इनको सदैव आभारी रहून.

'परी पोवारी' येनं काव्यसंग्रहासाती कवि डॉ. प्रल्हाद हरिणखेडे 'प्रहरी' इनको मी खूब खूब हार्दिक अभिनंदन करूसु अना भविष्य मा पोवारी साहित्य को उत्थान अना समृद्धीसाती असाच साहित्य लिखत रयेत येकोसाती इनला मोरोकनलका अग्रीम शुभेच्छा देसु.

*- **इंजी. गोवर्धन बिसेन 'गोकुल'***
कवि, लेखक अना प्रकाशक
गायत्रीकुंज, गजानन कॉलोनी, कुडवा,
गोंदिया – ४४१६१४
मो. नं. ९४२२८३२९४१

अनुक्रमणिका

अक्र	शिर्षक	पान क्र.
१	ईश्वर प्रार्थना	५
२	माँ गड़कालिका की आरती	६
३	महादेव	७
४	महाराजा भोज	८
५	परी पोवारी सुंदर	९
६	होय नही सिकं	१०
७	मन मंदिर मा स्थान	११
८	पोवारी साठी कंबर कसो	१३
९	परी पोवारी	१५
१०	पोवारी का वारकरी	१७
११	ज्योत	१८
१२	पोवारी एकता	१९
१३	पोवार भाऊ	२०
१४	मिठ्ठू	२१
१५	सुमः पोवारी एकता जिंदाबाद	२२
१६	जाग पोवार धूरंदर	२३
१७	ऊठ नौजवान पोवार	२४
१८	पोवारी मोरो शान की बोली	२५
१९	पोवारी को देऊळ	२६
२०	चल पड़ी कलपी	२७
२१	वूच मी पोवार	२८

२२	पोवार को असर समजेव जाय	२९
२३	कुलश्रेष्ठ क्षत्रिय राजा भोज जंयती	३०
२४	पोवारी को परिवेशमाच मोरो जनम हो	३१
२५	पोवारी दिवस भाग्य को	३२
२६	फक्त पोवारीच शुद्ध	३३
२७	खुशनशीबी क्षत्रिय पोवार की	३४
२८	माऊली मायबोली	३५
२९	असो समजू नोको	३६
३०	पोवार पहाळी छाती का	३७
३१	तू खरो पोवार	३८
३२	मायबोली को आगाज	३९
३३	अमर पोवारी अजरामर	४०
३४	पुकार	४१
३५	पोवारी एकता	४२
३६	आया दिन खुशाली का	४३
३७	जसी पोवारी परी	४४
३८	रहे पोवार की शान	४५
३९	पर पोवार को अस्त नहीं	४६
४०	कदम कदम की संकरात	४७
४१	राजा भोजला याद करी सेव	४८
४२	आवो एक रवानीमा	४९
४३	पयचान या पोवार की	५०
४४	मोरी पोवारी तल्लख	५१
४५	मोरी फाटकी कथड़ी	५२
४६	बात बने	५३

४७	पोवार की बोली	५४
४८	मायबोलीलाई दुय सब्द	५५
४९	पोवारी बाना	५६
५०	नवतरी को खाजो	५८
५१	आमरो खुसहाली की निस्यानी	५९
५२	जरा संभलकर चल	६१
५३	मान को बान	६२
५४	खुरची/ कुरसी: सिंहासन बत्तीसी	६३
५५	नारी वूच पाया	६५
५६	एकटा का एकता?	६६
५७	मोरो गांव की माती	६८
५८	भरं से उदर	६९
५९	तिज (अक्षय तृतीया): परंपरा पोवार की	७०
६०	रोवं से जी गावखारी	७१
६१	दिल गवाही दे नही भाऊ	७२
६२	सपनमा आयी परी	७३
६३	आचरन (वेवहार)	७४
६४	कर सशक्त खुदला	७५
६५	दमड़ी: दुनिया की सरताज	७६
६६	मांगूसू जोगवा	७८
६७	सवाल	७९
६८	अभिसेक सिंगोटीपर	८०
६९	कायलायी	८१
७०	ना खेत ना खलिहान मिलेव	८२
७१	मिठी बिश्वास की	८३

७२	रंगमंच आयुष्य को: संचित का खेल	८४
७३	गाव काकाच भलो	८५
७४	राजाराम सीताराम	८७

१. ईश्वर प्रार्थना

तन मन धनलं वंदन करू गनपती भगवान
सारो जग खुशहाल रहे देवो वरदान ॥धृ॥

काम क्रोध माया मोह लोभ रहित मन हो
सब को मन मंदिरमा तोरो दर्शन हो -२
हर इंसानला रहे इंसानियत को ध्यान ॥१॥

क्षमा करो हे लंबोदर मोरो अपराध
दुही संज तोरी पूजा करू तोला याद -२
आमरो वानीमा सदा रहे तोरो गुनगान ॥२॥

धरतोरी को हर कुटूंब संस्कारी हो
हर पिढी शिलवान हो आज्ञाकारी हो -२
स्वाभिमानलक रहूँ करू सब को सम्मान ॥३॥

माय बाप की सेवा आजीवन संयम
मोठा बुजरूक को आदर हो नित्य नियम -२
सदाचार को पथिक बनू मी आलिशान ॥४॥

मोरो कुल की संस्कृति को मी राही बनू
गुरूजन को सेवक दीन को हमराही बनू -२
सद्सद्विवेक बुद्धिलका हो नवनिर्मान ॥५॥

कर कृपा असी 'प्रहरी'पर जोडू करतल
मातृभूमी अना मायबोलीपर रहू अटल -२
चुकाय सकू मोरो समाज को मी अहसान ॥६॥
(२८.१२.२०२०)

२. माँ गड़कालिका की आरती

(चाल: आरती कुंजबिहारी की....)

आरती गड़कालिका की, नवरूप जय अंबिका की ॥धृ॥

तिनही लोक तोला ध्यावं, देव नारद तोरो गुन गावं
वेद तोरी महिमा सूनावं, पुरान तोरो दर्शन करवावं
हे दुखहारिनी पर्वतनंदिनी, चंडमुंड हरक चंडिका की ॥१॥

पोवार की कुलदेवी माता, काली रूप कारी धरती माता
सकल जीवन की अन्नदाता, रघुकुल शोभा मात सीता
ब्रम्हचारिनी जीवन दायिनी, चंद्रघंटा कुष्मांडा की ॥२॥

साखर दूध खीर मालपुहा, केरा शहद गुड़ मनचाहा
नारेन तीर फल सुकामेवा, भक्त तोला करं सेती स्वाहा
स्कंदमाता श्रेणि: श्री: कात्यायनी, कालरात्री कालनाशका की ॥३॥

पिवरो हिवरो अना भूरो रंग, संतऱ्या पांढरो लाल श्रीरंग
निलो गुलाबी बैगनी मंग, असा नवरात्री का नव रंग
महागौरी यती सिद्धिदात्री सती, भवानी पृथ्वी भवप्रिता की ॥४॥

शरणमा तोरो दुनिया सारी, आयेव तोरो चरणमा 'प्रहरी'
नवही रूप मनमा धरक्यारी, बारंबार जाऊं बलिहारी
लक्ष्मीनारायनी दुर्गा तपस्विनी, त्रिनेत्रा नित्याचामुंडा की ॥५॥

(२५.१०.२०२०)

३. महादेव

पशुपतीनाथ, गंगा डोईपर
वू देवाधिदेव, शिव महेश्वर ||१||

त्रिशूल फरस्या, हात मा डमरू
हित अहित को, शंभू महामेरू ||२||

तू प्रलयकर्ता, तू मंगलकर्ता
मृत्युंजय भीम, करुणा सरिता ||३||

व्याघ्रांबरधारी, चंद्रकोर जटा
प्रभू को गरो की, निलरंगी छटा ||४||

सरप गरोमा, रुद्राक्ष की हार
कैलास निवासी, उमा भरतार ||५||

डोस्काला भभूति, तापी त्रिलोचन
महाकाल करे, तांडव नर्तन ||६||

नारेन गौंगल, अना बेल पाना
महादेव जाऊ, गात गात गाना ||७||

(११.०३.२०२१)

४. महाराजा भोज

भोजवंश की महान गाथा जगमा अजरामर
आराध्य मोरो महाराजा श्री भोजदेव प्रमर ॥१॥

सर्वगुन संपन्न महावीर विद्वान आदर्श ज्ञानी
प्रजाप्रिय कवी सदाचारी त्यागी संस्कारी दानी ॥२॥

चौदा विद्या मालूम जेला वू राजा अग्निवंशी
धर्मपीठ की रक्षा करनला लिखिस ग्रंथ चौऱ्यांशी ॥३॥

आठवो सालमा एक रातमा रचिस चंपूरामायन
भोजदेव को नावलका आक्रमक करं पलायन ॥४॥

जसी वोकी तलवार चली रनभुमीमा बिजलीवानी
तसी चली एकसंघ करनला समाजमा लेखनी ॥५॥

महिमा महाराजा श्री भोज की करू मी सदा बखान
गौरव सारो देश को अना आमरो पोवार की शान ॥६॥

(३१.०१.२०२१)

५. परी पोवारी सुंदर

घड़ाईस समाजमा, बेटा कई धुरंधर
मोरी शान मायबोली, परी पोवारी सुंदर ॥१॥

हर पोवार बसेव, वोका कढ़्या 'ना कंबर
मोरो स्वाभिमान बोली, परी पोवारी सुंदर ॥२॥

बोल शब्द ममता का, मीठो रस समुंदर
मोरो मान मायबोली, परी पोवारी सुंदर ॥३॥

देसे साऊली सितल, वोको माया को पदर
आन बान मायबोली, परी पोवारी सुंदर ॥४॥

वैनगंगा नदी जसी, वोको हिरदा बादर
दिलो जान मायबोली, परी पोवारी सुंदर ॥५॥

पोवार को जिर्णोद्धार, वोको छड़ी को अंदर
संभासन मायबोली, परी पोवारी सुंदर ॥६॥

अस्मिता को बचावमा, शब्द खड़ग खंजर
शौर्यगान मायबोली, परी पोवारी सुंदर ॥७॥

(१२.१२.२०२१)

६. होय नही सिकं

मी तोला भुल जाऊँ, होय नही सिकं
तोरो पासना दुर जाऊँ, होय नही सिकं ॥१॥

तूच मोरी सकार अना तूच मोरी संध्या
तोरो बिना इर बिताऊं, होय नही सिकं ॥२॥

ठोकर लगता तोंडमालक तोरोच नाव हिटं से
दुसरी को मी गुन गाऊँ, होय नही सिकं ॥३॥

तुच मोरो इतिहास अना तूच परंपरा
तोरो वजूद खोवन देऊँ, होय नही सिकं ॥४॥

मनमा तोरी मुरत से पूजा तोरी करू
तोरो नास्तिक बन जाऊँ, होय नही सिकं ॥५॥

भोजवंशी पोवार की मायबोली पोवारी तू
तोरो उत्सव ना मनाऊँ, होयनहीसिकं ॥६॥

तोरो अस्तित्वलाई झटत रहूँ दिन रात
यव वचन तोड़ देऊँ, होय नही सिकं ॥७॥

(०५.०२.२०२१)

७. मन मंदिरमा स्थान

बोली पोवारी आमरी, आमी बड़ा भाग्यवान
मायबोली पोवारीला, मन मंदिरमा स्थान ||१||

धन्य माता सरसोती, बोली पोवारी की खान
माता गडकालिकाला, मन मंदिरमा स्थान ||२||

धन्य शंभू महाकाल, पोवार को भगवान
देवाधिदेव तोरो से, मन मंदिरमा स्थान ||३||

धरोहर परंपरा, मोरी संस्कृती महान
संस्कृतीला देऊं सदा, मन मंदिरमा स्थान ||४||

वैनगंगा थळीपर, बस्या पोवार किसान
दूध अमृत सो पानी, मन मंदिरमा स्थान ||५||

कारी माती खेतमा की, देसे भरपूर अन
धरतोरी मायला भी, मन मंदिरमा स्थान ||६||

धन्य भया वय कूल, राजा भोज जेकी शान
वंदनीय भोज तोला, मन मंदिरमा स्थान ||७||

मोरो शुद्ध हिंदू धर्म, वेद ग्रंथ पुरातन
मानवतावादी सिख, मन मंदिरमा स्थान ||८||

मोरा पुरखाइन को, कसो भुलू गुनगान?
कृपावंत तुमला भी, मन मंदिरमा स्थान ||९||

साहित्यिक अभ्यासक, मायबोली का विद्वान
सब महान कार्यला, मन मंदिरमा स्थान ||१०||

धन्य वय जितरब, बन्या पोवार को धन
खुट कोठा ढोला भऱ्या, मन मंदिरमा स्थान ||११||

असो समाज 'प्रहरी', देवत्व को वरदान
मोरो समाजला देऊं, मन मंदिरमा स्थान ||१२||

(०१.०४.२०२१)

८. पोवारी साठी कंबर कसो

(तर्ज: माणुसकीच्या शत्रुसंगे युद्ध आमुचे सुरू)

पोवारीको उत्कर्षसाठी उगाच नोको बसो
कंबर आपली कसो-२
पोवारो कंबर आपली कसो ॥धृ॥

माय पोवारी काशी गंगा, चंदन तुलसी रजनिगंधा
उपकार से बहुतसो, कंबर आपली कसो ॥१॥

पोवारी परिवारकी भाषा, विकासकी मनमा जिज्ञासा
करो बिचार जरासो, कंबर आपली कसो ॥२॥

याच साधना या आराधना,, पोवारीकी करूण भावना
परमेश्वरको जसो, कंबर आपली कसो ॥३॥

क्षत्रिय वंशकी परंपरा या, मिठो बोलकी अमर धरा या
ओम् नाव से जसो, कंबर आपली कसो ॥४॥

दादा दादी नाना नानी, पोवारीमा कहीन कहाणी
जीवन बाग बगिचो, कंबर आपली कसो ॥५॥

पोवारी संग गयी हयात, पोवारी संग मोठा भयात
आता नोको हसो, कंबर आपली कसो ॥६॥

सिक्या पढ्या अना नाव कमाया, पोवारीला सब बिसराया
बिचार करो येतरोसो, कंबर आपली कसो ॥७॥

मायबोलीमा नही रही आस्था, पोवारीकी भई दुरवस्था
ध्यान नही येतरोसो, कंबर आपली कसो ॥८॥

पोवारी सूनसान पडी से, लुप्त होनकी आई घडी से
काल बन्यो नागिनसो, कंबर आपली कसो ॥९॥

जख्मी पोवारी रोय रही से, दास्ताँ आपली कय रही से
आंसू वोका पोसो, कंबर आपली कसो ॥१०॥

पोवारी जबं बसे कंठमा, मोक्ष अपेक्षीत से वैकुंठमा
बातको करो भरोसो, कंबर आपली कसो ॥११॥

बोली आमरी गर्व पोवारी, चलो मनावबीन पर्व पोवारी
समय मिलेव साजरोसो, कंबर आपली कसो ॥१२॥

हिंदू नववर्ष दिनको मुहूर्त, पोवारी भाषा दिन उत्स्फूर्त
बसंत ऋतू साजेसो, कंबर आपली कसो ॥१३॥

(१८.०९.२०२०)

९. परी पोवारी

(चाल: एक कली मेरे ख्वाब मे आयी)

एक परी मोरो सपनमा राती, मोला सुनावं आपबिती ॥
पेढन पेढी वैभवकी रानीकी, भई कसी या दुर्गती ॥धृ॥

झुरझुरक्यानी चेहरामा झुर्री जरंसे जर्जर काया
मोहनी मुरत प्यारी सुरतपर ये कसा दिन आया
यकी परवाहको अभावमा आयी बडी बिकट परिस्थिती ॥१॥

एकताको माध्यम समताको साधन पोवारकी दारोमदार
समाजोत्थानकी आधारस्तंभ या आज भई से निराधार
नहानमोठो को मुखमा बसी रवं वानीकी देवी सरस्वती ॥२॥

दिन परिपाटीमा भरभराटीमा भऱ्या रवत येका ढोला
दुध दहिको वान नोहोतो खंडीभर गोधन खुटोला
राजेशाहीकी परंपरा यकी समृद्धशाली संस्कृती ॥३॥

नवीन जमानोको चकाचौंधमा अनदेखी भयी या बेचारी
येको आंचलमा सिक्या पढ्या अना माऱ्या उत्तुंग भरारी
पोवारी बोलनकी सरम आवंसे 'का कहेत संगी साथी?' ॥४॥

जागो पोवारो पयचानो आपलो जीवनकी या बुनियाद
भाषा पोवारी बोलचालकी आता बढ़ावो तादाद
गर्व करो आमी पोवार आजन चट्टानसी आमरी छाती ॥५॥

परी पोवारीनं वचन मांगी सेस 'भूलो नोको मायबोली
पराई भाषामा करो तरक्की पर चाटो नोको पदतली
इतिहास खरो बने तुम्हारो बची रहे पोवार जाती' ॥६॥

रात दिवसको बोलचाल लका परी बनी रहे चंगा
पोवारी टिके तं पोवार टिके बहे विकासकी गंगा
बोले 'प्रहरी' बोलो पोवारी आस्था ठेवो पोवारी प्रति ॥७॥

(०५.१०.२०२०)

१०. पोवारी का वारकरी

(चाल: चुप चुप खडे हो जरूर कोई बात है...)

एकजूटकी मशाल हातमा लेयक्यारी
मायबोली साती आमी भया वारकरी ॥
'जय हो पोवारी' याच आमरी ललकारी
मायबोली साती आमी भया वारकरी ॥धृ॥

पोवारी माय वाग्देवी मुखमाकी वानी, पोवारीच वैनगंगा वाच इंद्रायनी
पोवारीच विठ्ठल देहकी ब्रम्ह वारी, मायबोली साती... ॥१॥

देसे आमला बल वा करनको कष्ट, जगको पोट भरनको काम श्रेष्ठ
वरदान आमला पुर्वाश्रम कास्तकारी, मायबोली साती... ॥२॥

पोवार जातीमा गर करो छलावा, उधळ देबीन पार कपट अना कावा
डाव वालोंकी नही चले सावकारी, मायबोली साती... ॥३॥

पोवारीको संग आमरी जुळी से नार, वाच करं से आमरो उद्धार
पोवारीलक आदरका आमी मानकरी, मायबोली साती... ॥४॥

पोवारीच वोवी अना पोवारी अभंग, पोवारीमा टाळ अना पोवारी मृदंग
साहित्यकी पालखी चली से पंढरी, मायबोली साती... ॥५॥

येको रक्षाको व्रतको भस्म लल्लाटी, उत्कर्षकी मशाल मनमा से पेटी
पोवारीमा लिन आमी आठो 'प्रहरी', मायबोली साती... ॥६॥

(०९.१०.२०२०)

११. ज्योत

ज्योत
आमी तुफानकी
सदा जरत रवबीन
केतरिबी कोशिस करो पलावनकी ॥

ज्योत
घरकी शामबत्ती
हवा झोळपं तरी
आपलो धुनमा अविरत जरती ॥

ज्योत
जीवन शिक्षनकी
कठिण संकटलक उबारं
ताकत 'पोवारी उत्कर्ष' संगठनकी ॥

ज्योत
अखंड सत्यनामकी
सकल जीवन उद्धारक
मन बसेव रमैय्या रामकी ॥

ज्योत
पोवारी बोलीकी
सोपी साधी सरळ
मिठी रंगीत प्यारी फिपोलीकी ॥

(०९.१०.२०२०)

१२. पोवारी एकता

पोवार एकता गर एक् मंच होय जाये
जगमा हरेक कोना प्रतिमान छाय जाये ॥धृ॥

इतिहासमा हमारो विद्वान शूर ज्ञानी
आदर्श शील करूणा पोवार की निशानी
देबी नवो पिढीला उज्ज्वल भविष्य आये ॥१॥

मस्तक परा तिलक सी चंदन समान बोली
रंगीत बागपर की उड़ती जसी फिपोली
वको विकास करनो कर्तव्य होय जाये ॥२॥

बानी सरस्वती की गावो धड़ाक बोलो
बोलन शरम कहां की आता जबान खोलो
भाषा जतन करेलक जनमा सुधार आये ॥३॥

अड़तो की टांग छोड़ो हिंदू स्वधर्म मानो
'पिरथी तना पुंवारा' उक्ती यथार्थ जानो
नवतो नवो पिढ़ीला सम्मान देय जाये ॥४॥

रीती रिवाज सद्गुन पयचान आमरी से
संस्कार धर्म करनी या शान आमरी से
नैतिक जबाबदारी अस्तित्व ला टिकाये ॥५॥

बिखराव नासकारी परवश बनाय छोड़े
ना घाटला लगाये नाही मकान जोड़े
लिखता रहेत 'प्रहरी' साहित्य जगमगाये ॥६॥

(२९.१०.२०२०)

१३. पोवार भाऊ

(चाल: तेरी प्यारी प्यारी सुरत को....)

यनं क्षत्रिय वंशमा आयक्यारी उद्धार तू खुद को कर, पोवार भाऊ
समाज को काही देनो लगे या बात तू ध्यानमा धर, पोवार भाऊ ॥

पटिलकी आता सांगू नोको, कमावं से हरेक घरानो को
लोकतंत्रमा सब समान सेती, सूत्र समझले जमानो को
योजना भलाई की सेती बहुत, खुद को तू फायदा कर, पोवार भाऊ ॥

जन्मेस राम को रघुकूलमा, खर्चू नोको रे बाबा फिजुलमा
दिखावा मोठाईमा पुरखाइनको, नाव मिल जाये सप्पा धुलमा
किसान तू जग को पोशिंदा, खुद की तू पयचान कर, पोवार भाऊ ॥

तोरो मेहनत को मोतीला, बनाव क्रांती की ज्वाला
अरे पथिक तू कठीन मार्ग को, ठूकराय दे हर बाधाला
बन कर्णधार तू समाज को, सपना तू साकार कर, पोवार भाऊ ॥

पवन गतीलं प्रगती कर, सपना समाज का पूरा कर
हुनरबाज तू गर्व समाज को, भविष्य तोरो खांदापर
बंजर भूमी उपजाऊ बनाव, बढ़ के पुरूषार्थ तू कर, पोवार भाऊ ॥

पुढो चल मनमा लेय के उमंग, सब आयेती तोरो संग
एकता की मुठ्ठी ताकत तोरी, जीत जाजो कोई भी जंग
उद्यमी वृत्तीलक 'प्रहरी' तू, निज जीवन आबाद कर, पोवार भाऊ ॥

(३१.१०.२०२०)

१४. मिठ्ठू

(चाल: इन हवाओ मे आजा आजा रे)

चोला हिवरो अना चोच आमरी लाल रे
बोल मिठ्ठू ईश्वरको यव कसो कमाल रे ॥धृ॥

चोचको लाल रंग क्रांति दर्शावंसे, गडकालिका माताकी याद दिलावंसे
माताकी चुनरी लाल हातमा मशाल रे, बोल मिठ्ठू ..... ॥१॥

पोवार याद सारो जगको पोशिंदा, वाकडो अवजार लका करंसे धंधा
चोच वाकडी प्रतिक से नांगर कुदाल रे, बोल मिठ्ठू ..... ॥२॥

पोवारी मायबोली शहद भरी से, यकि परंपरा अना महिमा गहरी से
वोको वानीच आमरा मीठा बोल रे, बोल मिठ्ठू ..... ॥३॥

खाटो कडू चाहे तिखो खाओ, अच्छा बुराला पोटमा पचाओ
तरी बी जगमा बोलो मिठो बोल रे, बोल मिठ्ठू ..... ॥४॥

गरोकी गरसोली रिश्तोका बंधन, भूतदया अना सबमा आपलोपन
प्रतिक या सबको पालन, सबको सम्हाल रे, बोल मिठ्ठू ..... ॥५॥

हर एक जीवोला रंग रूप निरालो, सृष्टीको सार बखान करनेवालो
सुंदर या आमरी काया वोकीच मिसाल रे, बोल मिठ्ठू ..... ॥६॥

(२१.०९.२०२०)

१५. सुम: पोवारी एकता जिंदाबाद

अखंडता सुम समानता पोवार की फितरत
मेल अना संगठन एकता आमरी ताकत ॥धृ॥

गाव गावमा समाज बंधू सजग रहेव पर
दगा देन की कोनी नहीं कर सकं हिमाकत ॥१॥

आये अडचन कोनीपर अगर कोनी भी उंज्या
मदत की हर कोनालक झलके एकच हिम्मत ॥२॥

समाज कंटक जब भी चेहरा करे सामने
बेंड थोबडा करबीन वोकी बुरी हालत ॥३॥

वर्तमान भूत वैभवशाली पोवारी को
सदाचार मेहनत करनो पोवार की आदत ॥४॥

धर्म संस्कृती रहे खुद की या दिगर की
सब की इज्जत करनो आमरी इंसानियत ॥५॥

ये सद्‌गुन पोवार समाज को स्वाभिमान का
स्वाभाविक जरनेवाला करेती खिलाफत ॥६॥

पर आमरो सुममा भरी से ओज भोज को
अना वरदहस्त से गडकालिकासम शुभ दैवत ॥७॥

याच आमरी आय धरोहर पोसिंदा की
जिंदाबाद पोवारी एकता अमर अविरत ॥८॥

(२५.११.२०२०)

१६. जाग पोवार धूरंदर

ऊठ जाग पोवार धुरंदर रे
पनपाव पोवारी अंदर रे ॥धृ॥

आवाहन मोरो हर पिढीला
सब को एकच मंज़र रे ॥१॥

निज जीवनमा परभाषा को
नोको करू आडंबर रे ॥२॥

खुद की तोरी बिघड रही से
दिगर संग तू बंदर रे ॥३॥

पोवारी की खेती तोरी
होय रही से बंजर रे ॥४॥

मायबोलीला दुराय के नोको
तोड़ू अस्थि पंजर रे ॥५॥

रंगमहल तोरो भोजराज को
नोको बनाऊस खंडर रे ॥६॥

क्षत्रिय वंशज धड़धाकड़ तू
विरता को समंदर रे ॥७॥

क्षत्रिय कूल की लाज बचावन
बन समाज को सिकंदर रे ॥८॥

भर हूँकार समाज रक्षन की
पोवारी को पुरंदर रे ॥९॥

मनसा वाचा कर्मनालका
लिख तू खुद को मुकद्दर रे ॥१०॥

कर संघटन बनाव एकता
बन पोवार कलंदर रे ॥११॥

मंग उडाव थरकाप खली को
मार के दुष्ट छछूंदर रे ॥१२॥

गुंजे जयकार पोवार की 'प्रहरी'
दसो दिशा गिरी कंदर रे ॥१३॥

(०६.१२.२०२०)

१७. ऊठ नौजवान पोवार

(चाल: धिरे धिरे बोल कोई सुन ना ले)

चल ऊठ नौजवान पोवार, चेत्तो होय रे भई सकार
मिटेव इंधारो उजराकार, चेत्तो होय रे भई सकार
उजारो को आगोसमा, आव वास्तवमा होसमा ॥धृ॥

उमली कली 'ना देख खिली बनमा, किलबिल संगीत बजेव आंगनमा
सरिता गिरी, सरोवर दरी, जीवन आयेव जोसमा, आव..... ॥१॥

पोवारी की भय गयी से दैना, वोको यादमा अश्रू धार रैना
मी जगाऊ सू, रे मनाऊ सू, मायबोली से प्रदोसमा, आव..... ॥२॥

पोवारी बोलन की छोडो लाज, एक जमानो 'पृथ्वी तना' रे राज
छप्पन की उर, शूर बहादुर, वैभव तोरो कोसमा, आव..... ॥३॥

जुलूम बढ्या अना बढ्या रे अत्याचार, समाज मनमा फैलेव हाहाकार
कुकर्म का, अधर्म का, खुंखारी आक्रोसमा, आव..... ॥४॥

बन सपूत निर्वाह तू कर संस्कार, त्याग शरम, कर भाषा को उद्धार
नहीं तं फुकटमा, बडो बिकटमा, जगू नोको अफ़सोसमा, आव....॥५॥

वीर भोज की कलम अना तलवार, धुमिल गुनाहगारी अना गुनाहगार
रनभेरीलं, तूतारीलं, कभी संयम कभी रोसमा, आव..... ॥६॥

लेयक्यार आयेव रे 'प्रहरी' गीत, शब्द शब्दमा भरकर तोरो हित
कभी गद्यमा, कभी पद्यमा, उदयगान जल्लोसमा, आव..... ॥७॥

(०६.१२.२०२०)

१८. पोवारी मोरो शान की बोली

पोवारी सम्मान की बोली, मोरो स्वाभिमान की बोली
पोवारीपर नाज़ से मोला, आन बान मोरो शान की बोली ॥धृ॥

धन्य भया पोवार कुर बन के, धन्य भोज को जयजयकार की
क्षत्रिय पोवार की मायबोली या, हर पोवार को परिवार की
वैनगंगा को आवाका को, धड़धाकड़ किसान की बोली ॥१॥

येको जतन संवर्धनलाई, हर संभव सब फिक्र करोजी
येको खास शैली को हरदम, हर मज़मामा जिक्र करोजी
आमी सिपाही पोवारी का, या आमरो गुमान की बोली ॥२॥

सजगता को अभावमा काही, नादानी भय गयी भी अगर
जागो सारी गलती भुल के, साधो मिल के एक डगर
स्वाभिमानहिन बन के कसकसा, करो समजोत्थान की बोली? ॥३॥

पोवारी लाखों की बोली, अस्तित्व से चिंतामा भाई
समय आयी से मिलकर करबीन, पोवारी की सब अगुवाई
दुनियामा मिसाल बने जो, असो एकच अभियान की बोली ॥४॥

(२०.१२.२०२०)

१९. पोवारी को देऊळ

जिंदगीमा रहे पायजे दाऊळ ऊजूळ
काममा समान दूही सेंड़ा अना बुळ ॥१॥

गन्ना को मिठोपन चाखो कई रूपमा
पिवो रस चाहे खावो साखर या गूळ ॥२॥

हतोरी की उंगली पाचही बेगरी बेगरी
कोनी पतली कोनी मोटी कोनी लंबी आखुळ ॥३॥

समान देह रचना, पर खुराक अलग अलग
कोनी को से नहान कोनी को मोठो आदुळ ॥४॥

अलग अलग यंत्रमा, इंजिन को तत्त्व एक
छत हवा पानी रोड कोनी धरे रूळ ॥५॥

भाषामा भी एक अर्थ का शब्द सेत अनेक
मराठी को वासुदेव पोवारीमा पांगुळ ॥६॥

ईश्वरनं बनाईस हर चिज न्यारी न्यारी
येनंच भिन्नतामा बस्या एकता का मूळ ॥७॥

विविधतामा समता से समतामा से सूम
सूमलका बन जासे एकता को राऊळ ॥८॥

एक दिन तं दुसरी रात, भोवरी बारा आसी
एकतामा दूहिला बांधं से या असकूळ ॥९॥

जहां भी रवो खुशीमा विचरो पोवार
जतन करो हरेक जागा पोवारी को देऊळ ॥१०॥
(२१.१२.२०२०)

२०. चल पड़ी कलपी

कारो बादरला भिय जाऊँ, मी नोहोव वू आसमान
स्वाभिमानलक मुकर जाऊँ, मी नही येतरो नादान॥१॥

कर्तिया मोरो से सदा, निभाऊँ क्षत्रिय धर्मला
भाग्य खुद को बनाऊँ अंगिकार के कर्मला
कर्म पथपरलक भटक जाऊँ, मी नोहोव वू बैमान॥२॥

मोराच अगर बनक्यार कौरव, लाख को घर बनायेती
समजलेव मोरो स्वाभिमानला अना गुरूरला जगायेती
अर्जुन आव मी गांडीवधारी, नोहोव मामुली इंसान॥३॥

मोरो पिरेम, आपलोपन आपलोइनलाई से हिरदामा
मोरो दृढ विश्वास से महादेव गढ कालिका शारदामा
छल कपटलक मोला तोडो, बयमानो, नाहाय आसान॥४॥

पुळ्हो अगर दिस जावो, चापलूस बयमान बदकार
नहीं खपनकी आता तुमरी नकली दोगली दरकार
सुधर जावो नही तं खुदका, देख नही सिकनकात निशान॥५॥

चल पडी से कलपी आता, आपलो गुमान को रस्तापर
आपरो शानदार गौरव अना वैभव को उत्थान को रस्तापर
जुड रही से पोवार हरेक, नही रुकन को आता तुफान॥६॥

(१४.०१.२०२१)

२१. वूच मी पोवार

वाच मोरी खेती, वूच मी कास्तकार
क्षत्रिय कुलवंश को वूच मी पोवार ॥१॥

नही बदली तापी वर्धा ना ही वैनगंगा
वूच पानी जीवनदायी वाच वोकी धार ॥२॥

वूच मुंदरामा उगम वूच सातपूड़ा
वूच भोपाल नगरधन वूच उज्जैन धार ॥३॥

वाच देवी गड़कालिका वूच महाकाल
वूच मोरो आराध्य उनकोच आधार ॥४॥

वाच मोरी बोली भाषा वाच परंपरा
वूच मोरो बाना वयच मोरा संस्कार ॥५॥

सारो काही वूच से मंग बदलू काहे जात?
आंदी जो होतो रहूँ वूच मी पोवार ॥६॥

(२२.०१.२०२१)

२२. पोवार को असर समजेव जाय

कृषिपरा देश को गुजर बसर समजेव जाय
पोवार कास्तकार भी अग्रेसर समजेव जाय ॥१॥

मालवालका आयस्यारी बस्या नदी काठं
पैदावार बढ़ावन को शुभ अवसर समजेव जाय ॥२॥

तलवार को जागापर जबं नांगर आयेव हातमा
बदल देईस धरतोरी माता को हसर समजेव जाय ॥३॥

भोजवंश को धागा पोवार, ज्वाला जसो तेज
हर क्षेत्रमा चमकी वोकी कला कुसर समजेव जाय ॥४॥

अग्निवंशी क्षत्रिय फैल्या बस्या जहां जहां
संस्कृतिला निभाईन रितसर समजेव जाय ॥५॥

तलवार कलम नांगर गाड़ी व्यवसाय या राजनिती
हर आंगं क्षत्रिय पोवार को असर समजेव जाय ॥६॥

आड़ीजात पोवारला कसेत कंजूस चुम्मक
पोवारलाई या बात नाहाय अडसर समजेव जाय ॥७॥

उज्ज्वल भविष्य की आय दारोमदार ज्या
वोको बचत करन की काटकसर समजेव जाय ॥८॥

वाग्देवी गड़कालिका माता अना महाकाल को
आशिषलका महफूज़ हर घर समजेव जाय ॥९॥

राष्ट्र को उत्थानमा ज्या अग्रेसर से 'प्रहरी'
वोको उत्थानलाई नही कसर समजेव जाय ॥१०॥
(०६.०२.२०२१)

२३. कुलश्रेष्ठ क्षत्रिय राजा भोज जंयती

अजरामर करीस जेनं अग्निवंस की कीर्ती
बसंत पंचमी राजा भोज की जयंती ||धृ||

जाग गया गाव गाव नगर अना गल्ली
खुसीमा झूम उठ्या सप्पा लल्ला अना लल्ली
जन जन को मनमा भय गयी से जागृती ||१||

बचपनमा चंपूरामायन ग्रंथ लिखनेवालो
चौदा विद्या को अद्भुत ज्ञान सिखनेवालो
विद्वान दृष्टा असो प्रजाप्रिय भूपती ||२||

चौरासी ग्रंथइन को रचयिता राजा
पोवार कुलमा श्रेष्ठ सिंहासन बिराजा
तलवार अना कलम को बनेव अधिपती ||३||

रंगोली मालालक हरेक नगर सजावो
गडकालिका माताजी को मंदिरमा आवो
फुलमाला चढावो सबजन पेटावो बाती ||४||

कुलभूषन अग्निवंसी महाराजा प्रभावी
शूरवीर गुनवान की चरित्रवान छवी
आपलो राजा की सदा गाऊ महती ||५||

(१४.०२.२०२१)

२४. पोवारी को परिवेशमाच मोरो जनम हो

हे कुलदैवत, तोरो एतरो सो अनम हो
पोवारी को परिवेशमाच मोरो जनम हो ||धृ||

जब भी मोरी पहचान हो पोवार कहलाऊं
क्षत्रिय अग्निवंश मोरो वू कुल परम हो ||१||

शास्त्र को ज्ञाता महिपति को करूं अनुसरन
मालवाधिश भोजदेव ही आराध्य सनम हो ||२||

बन जाऊं अन्नदाता जो पोशिंदा जगत को
सब जीवला संतुष्ट करनो मोरो धरम हो ||३||

क्षत्रिय बन के मानवता को धरम निभाऊं
अन्याय को खिलाफ जेको खून गरम हो ||४||

हर बार या दरकार करूं तोरो चरनमा
रक्षा करूं मी सब की सुरक्षित अजम हो ||५||

बन जाऊं वू गोटा जो बने नींव राष्ट्र की
मानेती जग मा लोहा चमकतो वू चमन हो ||६||

या कभी बनाय दे मोला वा माती खेत की
बन जाऊं चरन धुल तोरी असो मोरो करम हो ||७||

तलवार गर बन जाऊं कभी राजा भोज की
दुश्मनला चिरूं धार जो वा पैनी चरम हो ||८||

अथवा श्री भोज की कलम बन जाय रे 'प्रहरी'
जेको मा युग प्रवर्तन को असली वू मरम हो ||९||

(२४.०२.२०२१)

२५. पोवारी दिवस भाग्य को

पोवारी दिवस, आयेव भाग्य को
होय आरोग्य को, बोलबाला ||१||

वेद शास्त्र ग्रंथ, वर्णन विस्तार
अजलं संसार, सुरू भयो ||२||

शुभ मुहूर्तला, नवीन संकल्प
सत्यला विकल्प, फक्त सत्य ||३||

मद्य मास धुम्र, त्यागो अवगुन
सदैव स्मरन, राम नाम ||४||

वायफळ खर्च, बाटो गरजूमा
जंगल जंतूमा, दर्द जानो ||५||

मंदिर को देव, काही नही करं
पोट नही भरं, गरिब को ||६||

जित्ता देव मोरा, माय बाप गन
विवेकी सज्जन, सुधारक ||७||

दान धर्म सेवा, जीवन को ससाज
सत्य कर्म काज, मुल मंत्र ||८||

पोवारी बोली का, बनो वारकरी
द्वार का प्रहरी, पंढरीमा ||९||

(१३.०४.२०२१)

२६. फक्त पोवारीच शुद्ध

मोरी पोवारी बोली से, शब्द रतन की खान
मोला मोरो पोवारी को, भाऊ सार्थ अभिमान ||१||

रीति रिवाज संस्कार, हिंदू धर्म सनातन
परंपरा विधीमा से, वैज्ञानिक दृष्टिकोन ||२||

भ्रम नाहाय कोनतो, नेंग दस्तूर प्रथामा
सिख भेटे जीवन की, सार पुरान कथामा ||३||

अशी संस्कारलं सजी, अलंकारमा पोवारी
शुद्ध वर्तनवाचक, सुर तालमा उच्चारी ||४||

वका आमी बालबच्चा, माय आमरी पोवारी
चलो कर्ज चुकावबी, पोवारीमा बोलस्यारी ||५||

जसी माय पिवावं से, खुद को पोषक दूध
तसी पवित्र पोवारी, फक्त पोवारीच शुद्ध ||६||

गर करो पोवारीला, दीन हिन अपभ्रंश
होये गा चकनाचुर, क्षत्रिय पोवार वंश ||७||

बनी छत्तीस कुर की, सुंदरशी फुलमाला
अर्पू वाग्देवी शंभूला, माय गडकालिकाला ||८||

धन्य क्षत्रिय पोवार, करो मनमा बिचार
चेतनाला जगायके, करो बोली को उद्धार ||९||

देव नाराज वका जो, बोली बोलन लजासे
बोलो असी पोवारी की, भोज विक्रम बी हासे ||१०||
(०१.०५.२०२१)

२७. खुशनशीबी क्षत्रिय पोवार की

खुशनशीबी का वर्णू क्षत्रिय पोवार की
नस नसमा समाई से संस्कृती या धार की ||धृ||

विक्रमसेन भोजराज पुरोधा पोवार का
चवरीपर की टवरी से पयचान परिवार की ||१||

लिंबखाल्या मातामाय साक्षात गडकालिका
महाकाल की पूजा पोहा को संस्कार की ||२||

गोरा चिट्टा धडधाकड उचा पुरा देवरूप
रग मा मिजास भारी नेता सरदार की ||३||

हात मा मिले जो काम करे पोवार ख़ुशी ख़ुशी
नांगर मशीन कलम चाहे संधी तलवार की ||४||

जो भी आये द्वारपरा जसो बने दान करे
एक भी भिकारी नहीं, ख्याती या पोवार की ||५||

जब भी जनम होय मोरो जन्मू पोवार घरं
इच्छा पुरी कर देवा तोरो तलबगार की ||६||

(०३.०५.२०२१)

२८. माऊली मायबोली

मोला कुसमा धर के, गोंजारीस पोवारीनं
गर्भ संस्कारमा मोला, सवारीस पोवारीनं ॥१॥

पान्हामालं माऊली को, बव्हं धार मायबोली
तृप्त भयी पिवाय के, हरबार मायबोली ॥२॥

जसी दहीमा की लोनी, जसी दुधमा की साय
तसी कोमल माया की, मोरी या पोवारी माय ॥३॥

ओवी अभंग सरीखा, येका पिरेम का गाना
झोरा खलतामा भऱ्या, दुआ त्याग का खजाना ॥४॥

ठंडी गर्मी बरसात, आया सुख दुःख कई
बनी सुरक्षा कवच, मोऱ्या कथळी रजई ॥५॥

वको नावमा से अर्थ, 'पोव' जाऊ मी सागर
'पोर' जानो जी लेकरू, 'वार' करू छलीपर ॥६॥

(२१.०५.२०२१)

२९. असो समजू नोको

मोला कोनी का कहे? असो समजू नोको
पोवारीमा कमी रहे, असो समजू नोको ||धृ||

मोठो दिसनलाई परभाषा की साद धरं से
आबं बी मन पोवारीमाच अनुवाद करं से
बोलीमा काही नही रहे, असो समजू नोको ||१||

पोवार रय के परभाषामाच घरं बाहेर बोलेवलक
आपली छोड परायी संस्कृतीमा डोलेवलक
समाज मोला वान्हाये, असो समजू नोको ||२||

लिखेव गयेव होतो पयलो गाना पोवारीमा
पोवारी झलकं से आळी जात को उच्चारीमा
समय संगं बोली ढहे, असो समजू नोको ||३||

पोवार संगं पोवारीमाच, बोलो, आपलो लगे
असोलका आपलो पोवारीको अलख जगे
पोवारी को समय गयेव, असो समजू नोको ||४||

मायबोली अना संस्कृती को जतन होये बिना
उत्थान आपलो समाज को होय सिकं कभी ना
पोवार की गंगा बहे, असो समजू नोको ||५||

एकटोलका का होये? अशी सोच गलत से
नाव दुसरोला धरन की मनमा गफलत से
“समाज मोरो भार सहे”, असो समजू नोको ||६||

(०२.०६.२०२१)

३०. पोवार पहाळी छाती का

आमी पोवार पहाळी छाती का
राजा रानी कारी माती का ||धृ||

झुंझूरकालं दिवस बुळतावरी
मातीमा राबता कष्टकरी
खेत का काम दिन राती का ||१||

काटा गोटा गवत काळी कचरा
जंगली जानवर को भी से खतरा
साप किटूर नाना जाती का ||२||

हातमा कलम नांगर चाहे तलवार
हर काममा जीतकाच हकदार
क्षत्रिय गोरा गोरा कांती का ||३||

देव किरपा से आमरोपरा
भरन पोसन येनं मातीपरा
उपकार बडा अन्नदाती का ||४||

जहां लगाऊसू तन मन धन
वहां उपजाऊसू अनमोल रतन
दुनियाला घास चपाती का ||५||

(२६.०६.२०२१)

३१. तू खरो पोवार

हिरदा मा ठेव पोवारी तं तू खरो पोवार
निज अस्मिता से प्यारी तं तू खरो पोवार ||धृ||

'नोन' जेको खानं वोको फेड़नं उपकार
से दिलमा या तैयारी तं तू खरो पोवार ||१||

डोरामालक पोवारीला ओझल नोको करू
पोवारी की से खुमारी तं तू खरो पोवार ||२||

काही तरी तू सोच पोवारी को बारामा
निभाव जवाबदारी तं तू खरो पोवार ||३||

बेईमानी की तिजोरी नहीं होय फलितमान
तोरो मा से ईमानदारी तं तू खरो पोवार ||४||

क्षत्रिय कुल को तू देवी देव को कूल को
वान्हाये दुनिया सारी तं तू खरो पोवार ||५||

दुनियालका एक रोज तं जानोच से सबला
असी काही कर गुजारी तं तू खरो पोवार ||६||

(११.०९.२०२१)

३२. मायबोली को आगाज

मायबोली को तुमी करो आगाज सजन हो
पुरातन पोवारी परा करो नाज सजन हो ||धृ||

मन को बिचारला मिलेव आकार लफ्ज को
उतरावो पटलपर वय अलफाज सजन हो ||१||

तलवार, कलम जब बने बंडी दतार हल
बनेती दुही हात बळीराज सजन हो ||२||

खंदो अक्षर की खार बांधो शब्द की पेंडी
लगे चिखलपर मोर पंखी ताज सजन हो ||३||

जब वाक्य बनेती पऱ्हा को पाथ को घायी
हरित सिवार सिरटी को वू साज सजन हो ||४||

पिके फसल सब आंगं सामाजिक विकास की
कभी गद्य कभी पद्य को अनाज सजन हो ||५||

आयी से वक्त शब्दमा उड़ान भरन को
आमी कल्पना का नहीं मोहताज सजन हो ||६||

(१३.०९.२०२१)

३३. अमर पोवारी अजरामर

रंगबिरंगी फाग पोवारी, सूर्यदेव की धाग पोवारी
अग्निकुंड की आग पोवारी, निंगरा वानी प्रखर
अमर पोवारी अजरामर ||१||

देहकुड़ी को प्रान पोवारी, सच बोले जुबान पोवारी
विद्‌या शक्ती ज्ञान पोवारी, मंदिर वानी घर
अमर पोवारी अजरामर ||२||

अजी माय को प्यार पोवारी, बैनगंगा की धार पोवारी
क्षत्रिय को संस्कार पोवारी, दैवी गुण को असर
अमर पोवारी अजरामर ||३||

होशला की उड्‌डाण पोवारी, गतिशील तुफान पोवारी
आन बान अना शान पोवारी, हिंमत को सागर
अमर पोवारी अजरामर ||४||

(१७.०९.२०२१)

३४. पुकार

जरा आयको पोवार, ध्यान मोरोकन देवो
ओठ, गरोमा आपलो, गीत बोल मोरा ठेवो ॥१॥

बगिचामा हिरदा को, फुल बन खिल जाऊँ
सुर बनू भोवरा को, फुलं फुल इटकाऊँ ॥२॥

एक कोंटोमा मन को, मोरी बसावो मुरत
करूं तुमरो ठोका को, मोरा श्वास सुपुरत ॥३॥

मीच चोवू सपनामा, देखो मन को डोरामा
माया पिरेम तुमला, करूं आपलो कोरामा ॥४॥

लख लाभ आशिर्वाद, मोरो लेकरूइनला
मिलं होसला बुलंदी, मोरो पाखरूइनला ॥५॥

(२०.०९.२०२१)

३५. पोवारी एकता

(चाल: आला थंडीचा महिना...)

आमी कवत रय गया सबला एकता एकता
भगाईस भलतानंच आमरो डोरा को देखता ||धृ||

भया लागर सप्पा जितं उतं ढुंढक्यारी
अना लग्या लाहाकन फिर फिर दरी कपारी
गरो वार गयेव देखो आमरो खेकता खेकता ||१||

फेको डोरापरलं काहाळ के घमंड को चसमा
करो जिद्द बाजूला भरो पिरेम अंतसमा
बिखरे समाज स्वार्थ की रोटीला सेकता सेकता ||२||

आता पड़े बनावनो 'मी' लक 'आमी' को सरबत
घोलो सोच आपापली सब होय जावो एकमत
मिसरावनो पड़े सब को हिरदा मा की अनेकता ||३||

लग्या रवबीन सब जन मिलाय के हातमा हात
वोनं 'भलता' का तब तोड़ सकबीन सब दात
आये पोवारी एकताला सारी दुनिया मा लेखता ||४||

ठेवो आग भपकती आपलो जवान दिलमा
आमला देख के 'भलता' लुकाय जाये बिलमा
संगं आयेती बुजरूक लखोटी टेकता टेकता ||५||

आवो मिलकर सप्पाई, लगावो थोड़ी अक्कल
हान पाड़ो 'भलता' की, समाज मा भरी शक्कल
आये तबच समाजमा, पोवारी एकता एकता ||६||
(२६.०९.२०२१)

३६. आया दिन खुशाली का

दिवस उंगती का रंग को मुकूट, धर आयी बाली बाली
असल खेत की फसल खुशीमा, झुम रही से हरियाली ||१||

रान सिवारमा धुरा पारीपर, फुल हासता बहुरंगी
रानमेवालक लद्‌या झळुला, सेंडीवरी बेला टंगी ||२||

ओलमा हासं डिरा कठानी, धान कटन की देखे बाट
तपन संगं से खेलनो वोला, संगमा बहती हवा को ठाट ||३||

चलेव खेतमा किसान हासत, नजर गळी नवधानीमा
आये नवतरी पळेत दाना, भर भर ढोला भानीमा ||४||

आयी दिवारी करो तयारी, दिवो जरावो हिरदामा
लछमीजी को करो शुक्रिया, सिग लगाये खुरदामा ||५||

क्षत्रिय सदा उपासक आमी, खड़ग लेखनी कुदाली का
घर घर बाटो खुशी मिठाई, आया दिन खुशाली का ||६||

(३०.१०.२०२१)

३७. जसी पोवारी परी

अंवदा समया अच्छो पळी से, लेय देव सोनो की सरी
जेला पेहेर के सबमा बिराजू, जसी पोवारी परी ||धृ||

पंधरा नहीं तं दसच तोरा, सरीलाई मोरा तरस्या डोरा
नहीं मांगू मी राज सिंहासन-२, नहीं मांगू स्यालरी ||१||

सब जेवरमा नामी जेवर, आंगपर येको अलगच तेवर
चंद्रमुखी सी नारी लगं से-२, दुर्गा लक्ष्मी गवरी ||२||

सालभर खेतमा नदी को पानी, पिकाऊं खरीप रबी 'ना कठानी
खंड देऊं पैसा देय देव मोहलत-२, सिरीप तीन सालवरी ||३||

पुछेती कोन कर की आय बाई, सबमा तुमरीच होये बढ़ाई
आमरी जरनूक करनेवालों की-२, रय जाये धरी की धरी ||४||

सरी घायी तुमरो नाव बी चमके, खुशीलं काममा मोरो मन रमके
एकठन इच्छा पुरी करो बस-२, तुमी धनी मोरा करफरी ||५||

जानुसू आयेव नवो जमानो, सरी को रूतबा भयेव पुरानो
आपलोपर से टिकावनो वोला-२, जबलक से धरतरी ||६||

संस्कृती आपरी जपनला होना, वाच आय खरीखुरी रतन 'ना सोना
आपरो ऐपतलका रे 'प्रहरी'-२, लेय ले एकगन तरी ||७||

(१२.१२.२०२१)

३८. रहे पोवार की शान

कर जो तोरी बुद्धि सांगे या बात बड़ी आसान
मिटाव मन को मिथ्या तोला यवच से आव्हान ||

कहीं चकवावाला कहीं सिधा रस्ता जीवन डगर का
पर तोरो बुद्धि का रस्ता सच्चा अगर पगर का
मनला नोको देऊस लालच बनू नोको नादान ||१||

सच्चाईला गड़ेत काटा खिले गुलाब को घायी
बिना कसोटी सोनोला का कभी चमक से आयी?
कठीन समयमा बरत के संयम बन तू उर्जावान ||२||

समाज को काही ऋन फेडंनो से यव ध्यानमा धर ले
सच को साथ देय के जीवन भविष्य उज्ज्वल कर ले
आवनेवाली पिढ़ीलाई कर यव काम महान ||३||

बदलो चाहे गाव देश धोतर बाली 'ना चोली
राखो वैभवशाली धरोहर टिकाय के मायबोली
ठान ले यव जीवन मा 'प्रहरी' रहे पोवार की शान ||४||

(१३.१२.२०२१)

३९. पर पोवार को अस्त नहीं

व्यस्त भयेव
ग्रस्त भयेव
पर पोवार को
अस्त नहीं ||१||

त्रस्त भयेव
उध्वस्त भयेव
पर पोवार को
अस्त नहीं ||२||

चुस्त भयेव
तंदुरुस्त भयेव
पर पोवार को
अस्त नहीं ||३||

तटस्थ भयेव
मस्त भयेव
पर पोवार को
अस्त नहीं ||४||

(०८.०१.२०२२)

४०. कदम कदम की संकरात

ए हिंमती पोवार तू ए किमती पंवार तू
आपरो करमलका धरतीला संवार तू ॥धृ॥

प्रश्न जो बी आयेती संयमलका तू ढूंढ हल
कदम बढ़ाव तीर तीर उत्तरको दिस्यामा चल
धर्मलक अधर्मला घाटपर उतार तू ॥१॥

हिरदा तोरो सूर्याको मकरमा तू परवेस कर
होसलाकी पतंगमा सत्यकी उड्डान भर
थाम तोरो हातमा मांजा मक्रतार तू ॥२॥

हरित पित्त लाल रंग प्रतिक सप्तरंग का
कर सितल भवसिंधूला स्नान कर अभ्यंग का
देये जो वसुंधरा वूच कर स्विकार तू ॥३॥

घोल भेली शब्दमा बनाव मीठो आचरन
सबको हित होये असो बाट बान हासकन
बढ़ाव पिरेम मिलापलक निभाव ये संस्कार तू ॥४॥

शनै: शनै: मंजिलकन कदम कदमकी संकरात
शुभ अशुभ की साधना दानधर्म को परघात
सिरटीको भगवान की आरती ओवार तू ॥५॥

(१४.०१.२०२२)

४१. राजा भोजला याद करी सेव

माट्या संग मी वाद करी सेव
घर मोरो आबाद करी सेव ||१||

ना मोला काही डर कोनी को
खुदला जो बरबाद करी सेव ||२||

फस जाये चाहे फसनेवालो
मीनं कहां फसाद करी सेव? ||३||

वय पिंजरा जंजीर तोड के
खुदला खुद आजाद करी सेव ||४||

उडनेवाला झुंड जमाय के
होसला की तादाद करी सेव ||५||

जिकतवरी हारेव तरी बी
ना कोई फरियाद करी सेव ||६||

टकराऊं तुफानला बी वू
जीवन को अंदाज करी सेव ||७||

अक्षर शब्द अना कलम का
शस्त्रइनला फौलाद करी सेव ||८||

पथरीली सडक को मी राही
काटाला बुनियाद करी सेव ||९||

जो बी कहूँ अडिग होय कहुसू
छल कपट को सराद करी सेव ||१०||

नहीं होना लाईक ना माईक
एक पाइकला जायजाद करी सेव ||११||

सच्ची राह दिखाये जो बी
वोकोच धन्यवाद करी सेव ||१२||

चाहे दुहूर कहीं बी जाऊं
पोवारी जिंदाबाद करी सेव ||१३||

पावन बसंत पंचमी को दिन
राजा भोजला याद करी सेव ||१४||

'प्रहरी' साहित्यिक नाव को
हरिनखेडे प्रल्हाद करी सेव ||१५||

(०५.०२.२०२२)

४२. आवो एक रवानीमा

कोनी देखं से काचमा कोनी देखं से पानीमा
सप्पाई मस्त सेती उधार को जिंदगानीमा ॥१॥

आमरो उल्लुपणा को फायदा लेसेत संधी साधू
सांगं सेत गलतला सही अना सहीला तकलादू
उनला नाहाय रस पोवारी को बिघडी कहानीमा ॥२॥

आम्ही भी क्षणभंगूर लोभमा बह्य गया कसा?
ओरख्या नहीं बिलाई 'ना सेर को पाय का ठसा
खूद की मती सोपराय देया दिगर को वानीमा ॥३॥

छत्तिस कुर को पोवार की से पोवारी मायबोली
फिपोलीला छोड्या अना धऱ्या साप सिरोली
खबरदार! गर येला छेड्यात आपलो मनमानीमा ॥४॥

संधी साधू बगुलाइन को फंस के मिठो बोलमा
'इत्ता इत्ता पानी' खेल्या फस के गोल गोलमा
नोको मिलन देव आब्रू पोवारी की पानीमा ॥५॥

पुरखाइन की या धरोहर पोवारी से अजरामर
आमरी पयचान आन बान शान आदर
अपभ्रष्ट कर के नोको खोवो पत फानीमा ॥६॥

सम्हल जावो आबं भी से आमरो हाथ अवसर
विवेकलक बनावबी भविष्य की डगर सुकर
बन के सब का सानी आवो एक रवानीमा ॥७॥
(२०.१२.२०२०)

४३. पयचान या पोवार की

कर्म पथपरा रूकं नहीं पयचान या पोवार की
मर जाये पर झुकं नहीं पयचान या पोवार की ||धृ||

अकड़ जसी हिमालय की सव्वाशेर की दहाड़ से
तीरला चकनाचूर करे ऊर फौलादी पहाड़ से
वार कभी बी हुकं नहीं पयचान या पोवार की ||१||

आपरो जिदपरा जिये असो अलग एक ढंग से
भुजा वीर क्षत्रिय की रुतबा जेको दबंग से
धर्म निभावन चुकं नहीं पयचान या पोवार की ||२||

मुखपर तेज डोरा अंगारा आंगआंग मा चपल अदा
बेईमानला धूल चटाये हरेक हुन्नरी सफल सदा
आगला कोनी फुकं नहीं पयचान या पोवार की ||३||

अगर अड़ावो प्रलयंकारी स्वभाव नदी की धार को
सुरजवानी तेज प्रतापी चमके प्रभाव पोवार को
सामने दुश्मन टिकं नहीं पयचान या पोवार की ||४||

काटा गोटा तपती रेती चाहे किचड़ को रस्ता हो
सबला कुचलत आगे जाये असो पोवार को दस्ता हो
मंघं पलटकर ढुकं नहीं पयचान या पोवार की ||५||

वर्तमान मा जगनेवालो बन जासे स्वर्णिम इतिहास
क्षत्रिय धर्म को गुरूर जेला संस्कारित संस्कृती श्वास
गरम खून जो सुकं नहीं पयचान या पोवार की ||६||

(२२.०७.२०२२)

४४. मोरी पोवारी तल्लख

बोहू जुनी मायबोली, मोरी पोवारी अड़ानी
हर बोलमा बसी से, सरसोतीकीच बानी ॥१॥

माय बाप को रूपमा, बोल उचारनो सुरू
कसो जगमा निभनो, सिकाईस असी गुरू ॥२॥

तपनमा सावोली को, ठंडी तुफानमा स्याल
बरसादमा मोरोली, वोको पल्लू को खयाल ॥३॥

दिसं दिगर बोलीमा, वोको बोल की झलक
आड़ीजात बी बोलं से, मोरी पोवारी तल्लख ॥४॥

अक्षरमा पोवारी को, आय बसी से देवता
रंगू जीभपरा वका, बोल ठेवता ठेवता ॥५॥

(२५.०८.२०२२)

४५. मोरी फाटकी कथड़ी

मोरी फाटकी कथड़ी, तरी झाकं से मंडकी
जाम को डगालपरा, जसी बसी से फंडकी ||१||

आया गद्दा सोफा फोम, कारपेट ना चद्दर
रनी पड़ी ठेय ठेय, अना गयी कजदर ||२||

आनो घरका कपड़ा, काल परो वापऱ्याता
ठाट बाट रिवाजमा, शान आमरी बन्याता ||३||

शान बान टिकावन, आता लगावो ठेगूर
वाच पूंजा देवता की, चवरीपरा कागूर ||४||

धरो हिरदा की सूई, ओवो पिरेम को धागा
सीवो टाकालं ठेगूर, नवी होये फाटी जागा ||५||

हिट्या चिंधी का बुचूंड़ा, कहीं जमा कहीं टोभा
आलीस्यान कथड़ी की, बोयस्यान गयी सोभा ||६||

घासो साबन सोडालं, धोवो कुहूमो पानीमा
पिरो निथरे मईल, वारे आंगन सानीमा ||७||

(२५.०८.२०२२)

४६. बात बने

एकटी पड़ी पोवारीकन आवाज बढ़ावो बात बने
वोको विरानीमा वोला साज चढ़ावो बात बने ॥

फिरंगीइनको भीड़मा भटक न जाए असो करो
उपाय आपलो हातमा अंदाज लगावो बात बने ॥१॥

सरसोती साक्षात बसी हर पोवार को बानीमा
हिरदालक हर बोलमा अल्फाज़ चढ़ावो बात बने ॥२॥

कालवरी येको बगिचा फलेव फुलेव अच्छो होतो
मुरझायेवला तरतरो तुमी आज बनावो बात बने ॥३॥

मायबोली को साम्राज्य संकटमा से समझो जरा
मिलकर पोवारी रानीला ताज पेहेरावो बात बने ॥४॥

वोको अस्मिता को झंडा लहरावो सुर तालमा
नांद बजे सबमा ऊंचो पखवाज बजावो बात बने ॥५॥

(२६.०९.२०२३)

४७. पोवार की बोली

नदी की धार को आवाज से पोवार की बोली
सनातन धर्म को आगाज से पोवार की बोली
बडी ममताभरी मीठी सहद मिष्ठान्न पोवारी
समरमा शौर्य को अंदाज से पोवार की बोली ||१||

तपस्या को नवो परवान से पोवार की बोली
महेश्वर की दया, वरदान से पोवार की बोली
रकत रगमा बव्हं से राजशाही जो पुरातन लक
खरी या वीर अभिमान से पोवार की बोली ||२||

सही इंसान की दरकार से पोवार की बोली
करे भवपार वा पतवार से पोवार की बोली
सहन ना कर सिकं पोवार कोनी को अनादरला
अधम को वक्ष पर तलवार से पोवार की बोली ||३||

हमारी शान 'ना सम्मान से पोवार की बोली
खुशी लक झांकतो भगवान से पोवार की बोली
गुथाए एकता को सुत्रमा फुलमाल मानवता
धरापर प्रेम को सोपान से पोवार की बोली ||४||

सलोनो नंद को घनश्याम से पोवार की बोली
दिसे जो कर्म को परिणाम से पोवार की बोली
महाकाव्यों पुराणों वेद येकोमा दरस देसे
बिराजे जीभपर श्रीराम से पोवार की बोली ||५||

(१८.११.२०२३)

४८. मायबोलीलाई दुय सब्द

समाजकी फुलवारी
आमरी बोली पोवारी ॥

आमरो चमनकी क्यारी
आमरी बोली पोवारी ॥

रंगबिरंगी प्यारी
आमरी बोली पोवारी ॥

समाज बनावं संस्कारी
आमरी बोली पोवारी ॥

सब जनकी महतारी
आमरी बोली पोवारी ॥

(०७.०९.२०२०)

४९. पोवारी बाना

मोरो शायनो को रूबाब देखो, पोवारी बाना
जसा मोरा दादाजी तसा मोरा नाना-२ ॥धृ॥

खायीपियी हड्डी, खेलंसेत कबड्डी
अस्सीकी उमर नहीं होय भाऊ थोडी
खनखनाट आवाज से दुही को मर्दाना, पोवारी बाना ॥१॥

पिळदार मिसी, लजावं से बीसी
येनं उमरमा भी ठनठनीत बत्तिसी
केस पिक्या तरी तब्येत से ठनाना, पोवारी बाना ॥२॥

लाठी काडी बिना, नजर सोरा आना
चष्मा भी नही लगं आयकं दनदना
ताठ से शरीर अना धडधाकड़ सिना, पोवारी बाना ॥३॥

चेहरालं गोरा, बाटरा बाटरा डोरा
बसनोमा चलनोमा पटिल को तोर्रा
गाव को पंचायतमा सबदून स्याहाना, पोवारी बाना ॥४॥

धडीवालो पंच्या, दुय हात गमच्या
कूर्ता जैकेट की बटन जसा गोली कंच्या
फेटा अना टोपी का सौकीन पुराना, पोवारी बाना ॥५॥

बनं सेती घोड़ा, गमचा को कोड़ा
सवार सारो परिवार का नाती नतरू सोड़ा
सायकल भी चलावं सेती सनाना, पोवारी बाना ॥६॥

शायनो को कोऱ्या, पलंग हतोऱ्या
उन को हात डोस्कीपर बरसात मा मोऱ्या
रोज नवी नवी कहानी को खजाना, पोवारी बाना ॥७॥

उनका संस्कार, घर को आधार
हरेक समस्या को समाधान का भंडार
उन को फलसफालं सुधरं घराना, पोवारी बाना ॥८॥

आमरो लाई ईश्वर, ममता भरी नजर
सब को सुख दुख की ठेवं सेती खबर
भेटं खाजो मिठाई चना फुटाना, पोवारी बाना ॥९॥

(०२.११.२०२०)

५०. नवतरी को खाजो

माहेर मोरो गोदा माहेर को आशिर्वाद
नवतरी को खाजो मोरी खरी जायदाद ॥१॥

चुरनी भई सरसी भई नवतरी भी
भजो बंधू भोवजी यादावं माय अजी भी ॥२॥

बहिन, बेटी उनकी मी मैकामा मोरो भजो
मोला आस भारी आये नवतरी को खाजो ॥३॥

डबा भर के आये याद वा बचपना की
खमंग नवतरी को खाजो को झोलना की ॥४॥

रवा मुरा तिर का लाडू बर्फी अनारसा
कुसूम सेव चिवड़ा मालपूहा बतासा ॥५॥

लुगड़ा अना आंगी कपडा आने जरी को
रेहेका बस के आये बंधू कृष्ण सरिखो ॥६॥

पर जबं भी आवं से माहेरलका खाजो
सेजार बेठारमा होय जासे गाजो बाजो ॥७॥

सालभर की माया माहेर को आंगन की
नवतरी को खाजो देसे ताकत जगन की ॥८॥

क्षत्रिय पोवार घर की ख्याती दूरदूर
नवतरी को खाजो पोवारी नेंग दस्तूर ॥ ॥९॥

नवतरी को खाजो पोवारी की परंपरा
चलती रव्हं रित या जबंवरी चंद्रतारा॥१०॥
(१३.१२.२०२०)

५१. आमरो खुसहाली की निस्यानी

आमरो खुशहाली की याद आवं से निस्यानी
खपरेल को घरला बाजुमा गवत की सानी ॥१॥

सानीलक झाकी रव्हं घर की सांदोळी
बरनमा दुय गंगाऱ्या कुंडो की जोळी ॥२॥

तिसरो डोंगी को लंबो ससाऱ्या गोटा
तबंच गावमा सोभं पोवार को कोठा ॥३॥

कुक्कूस खल्ली चुन्नी को करत होता खबरा
वोकोमा पेज मिलाय के बनत होतो चोभरा ॥४॥

काजऱ्या पापड्या की जोडी करत होती बोहोनी
जिन को पर दारोमदार अख्खी किसानी ॥५॥

बादमा पानी पिवंती बगार बासरू
उन को मंघंमंघं सप्पा सेरी 'ना पाठरू ॥६॥

झिकन तान करं तबं वरी खुटो की भस
सोडता सोडता आमरी होय सरकस ॥७॥

धुंदाळवानी रेहेकत जाय सिद्दी बरनमा
वस्ताद पलभरमा डोंगी सफा करनमा ॥८॥

तनीस को बेठलक भऱ्या रव्हत पाटन
बाळीमा भी रवं येको वोको ढग की डाटन ॥९॥

रोज गवत काट के आनत होता बंडीभर
तबं कोठामा भरत होता पोट खंडीभर ॥१०॥

वोनं सोनोवानी दिन की करू का बढाई
कास्तकारी पशू सेवा संगं कऱ्या पढाई ॥११॥

दिन रात खानला भेटं घास दुधदही को
अना खर्चपानी मिलं कलम वही को ॥१२॥

अज गायी भसी करं सेती हंबा हंबा
नवो तरून पेढीला बड़ो होसे अचंभा ॥१३॥

धन ढोर कोठा बरन डोंगी कुंडो सानी
आमरो खुसहाली की याद आवं से निस्यानी ॥१४॥

(१८.१२.२०२०)

५२. जरा संभलकर चल

चल चल चल, संगी चलो, संभलो, ना जावो फिसल
काटा गोटा की या जीवन डगर से, जरा संभलकर चल ॥धृ॥

आपरो से कोन, परायो से कोन, मुसीबतमा या जानकारी मिले
सुख दुख मिले जीवनमा कभी, चिंता ना कर हंसकर के सहले
स्वार्थी मतलबी, पागल फरेबी, मिलेती तोला आजकल
काटा गोटा की या जीवन डगर से, जरा संभलकर चल ॥१॥

प्रदुषित पवन, कलूषित जीवन, माती को सत्व भी भंगित भयेव
नाना बिमारी, दुनिया से बुरी, सच को झुठ अना झुठ सच भय गयेव
सोचो समझो, सच्चाई बुझो, परख कपट अना छल
काटा गोटा की या जीवन डगर से, जरा संभलकर चल ॥२॥

चटक चांदनी, भडक रोशनी, चार ही आंगं दिखावा दिसे
क्षनभंगूर से, मंजील दूर से, मुमकिन कदम जोखीममा फसे
हिम्मत ना हार, धाकड़ पोवार, सुमिरनमा मिल जाये बल
काटा गोटा की या जीवन डगर से, जरा संभलकर चल ॥३॥

(१०.०१.२०२१)

५३. मान को बान

संकरात पासना चालू होसे हरदी कुकू
आईमाई की ईच्छा हाना कवनला सिकू ॥१॥

ओटी भर के सबजनी बाटं सेत बान
घरनघर बुलायक्यारी सबला देसेत मान ॥२॥

आपलो नवरा को लेनलाई शुभ नाव
आईमाई भलताच सरमा सेती राव ॥३॥

मरदमाना भी जरा आपला कान टवकारत
चुपचाप आयकं सेती एकांगं निहारत ॥४॥

काहे का जनानामा उन की दाल नही गलं
हरदीकुकू कार्यक्रममा मरदमाना नही चलं ॥५॥

तीर मुरा अना भेली का लाळू फराळ
रोज यहां वहां खान को होय जासे जुगाळ ॥६॥

पुरातन पासना चलत आई से या प्रथा
देवी देवताइन की भी मिलं सेती बान की कथा ॥७॥

सप्पा आईमाई अना सप्पा सखी सहेली
संकरात पासना खिलावं सेती तीर भेली ॥८॥

धन्य मरदमाना जरी जात नही बानमा
हानामा हाजरी लगं से कमी नही मानमा ॥९॥

(१७.०१.२०२१)

५४. खुरची/ कुरसी: सिंहासन बत्तीसी

खूरची कहो या कुरसी आय घरबारकी शान
देवता पासना मानुस वरी येकी किरती महान ||१||

मोठांग नहानांग ओसरी परा लग्या लकडाका आसन
शोभं राज दरबार जसो चलं घरको प्रशासन ||२||

आरामखुर्ची अथवा सादी हर घरको रुबाब
मंग वा बदली सोफामा खुरची बन गयी ख्वाब ||३||

बदलेव जमानोमा आया 'चेयर'मा बदलाव
प्लास्टिक फायबर लोहा टीन नाना आकार 'ना भाव ||४||

थक हार कर घर आवो बसो करो आराम
'व्हीलचेअर' पारना खुरची चैन देनको काम ||५||

खुरची पर बसनो रव्हं आसन प्राणायाम
धरतीको इस्पर्श बिना मिलं पूरो आराम ||६||

गुरू श्रोता राजा वरिष्ठ पुढारी या आफिसर
इनकी कुरसी माननीय देवताइनकी सर ||७||

एक दुय अना तीन चार कुरसी गिनती बताय
एक टेका दुय हात 'ना तीन पाटी चार पाय ||८||

चार पायकी खुरची बैठक पेंदा पर
मृत्यू बाद सकोली समान चारको खांदापर ||९||

निर्जीव खुरची रुबाबदार दिसं से सजीव सरीख
'घमंडी लालची ना बनो' देसे सबला सिख ||१०||

खुरची बनाये अभिमानी लालची हवामा उडाय
या दूरदर्शी कर्मशील वंदनीय भोजराय ||११||

आखरीमा सूनलो मोरी बात एक एत्तीसी
कुरसी वंदनीय भोजकी सिंहासन बत्तीसी ||१२||

(१५.०२.२०२१)

५५. नारी वूच पाया

नारी तू सबला, नारी महामाया
सृष्टी जेकी बनी, नारी वूच पाया ||१||

नारी चाहे सदा, बनू मी निडर
शालीनता संग, सतेज प्रखर ||२||

स्नेह अना प्रेम, सत्कर्म संस्कार
रूप अप्रतिम, असो चमत्कार ||३||

महिला की शक्ती, फैली दिगंतर
पुरुष महिला, मिटेव अंतर ||४||

नानाविध रूप, नाना अवतारी
कलम प्रपंच, तलवार धारी ||५||

अख्खो ब्रम्हांड की, रतन महिला
जसी नवनीत, घुसरो मही ला ||६||

सन्मानमा सखी, तू गौरव नारी!
सारो संसार को, से गौरव नारी ||७||

नमन नारीला, पुरुष की छाया
सृष्टी जेकी बनी, नारी वूच पाया ||८||

(२१.०२.२०२१)

५६. एकटा का एकता?

मोरो एक से सवाल, ध्यानलं सूनो जनाब
‘टार’ दे का ‘तार’ दे, बोलो कोनतो जबाब? ||धृ||

टारनो से मारनो, बुद्धीहिनता भयी
किडा की जिनगी अना, मती मलिनता भयी
तारनो उद्धारनो, बुद्धीमानी से साहाब ||१||

‘टार’ ‘तार’ अर्थमा, शब्द ये अलग अलग
'टार' देनो पाप से, 'तार'नोलक मिले सरग
‘टा’ अना ‘ता’ को अलग, उच्चारन को हिसाब ||२||

एकला लगावो दुही, का मिले तं देख लेव
'टा' लका दूरी बढे, 'ता' लका ताता जमेव
एकटा का एकता, कोनलक से इंकलाब? ||३||

एकटा रहो तं किडा, मुंगी को जीवन भलो
आयीसेस एकलो, गयेव कबं वू एकलो
एकतामा खिल उठे, बंधुभाव को गुलाब ||४||

एकटामा एकटो की, सोच बने स्वारथी
एकता देव भी, बने तुम्हारो सारथी
होये हिन दीनता, न्यूनगंड को जुलाब ||५||

एकता की सोच से, उदारता भलाई की
एकटोला न्यूनगंड, सोच भी बुराई की
झोपडीमा भी रहो, मिले अमीरी को खिताब ||६||

एकमा मिलावो अन्य, बन जाये अनेकता
बुंदको सागर बने, जोड की विशेषता
रात को इंधारोमा, तारापुंज को रुबाब ||७||

संस्कृती, समाज को जतन की नींव एकता
अनेकतामा एकता, वतन की नींव एकता
'प्रहरी' धरो मशाल एकता की लाजवाब ||८||

(०४.०४.२०२१)

५७. मोरो गांव की माती

मोरो गांव की माती, चिकनी 'ना कनखर
सारो गांव मा चूल्हा, वोका बन्या घरोघर ||१||

मोरो गांव की माती, बड़ी कनारी कनारी
पिवरो सोनो पिकावं से, कठानीला गुनकारी ||२||

मोरो गांव की माती, खंदू पळ 'ना मऱ्यान
कुटार को संग लिपू, आंगन सपरी पाटन ||३||

मोरो गांव की माती, तरा को पोट की गार
वाफा वफली पोलांद्या, बाड़ी बेलो भरदार ||४||

मोरो गांव की माती, कहीं लाल चोपनाई
खनी ढोला पाटन का, भीत जाफरी ढलाई ||५||

मोरो गांव की माती, बन्या भदाळ गंगार
मलोकी मथनी पारो, करसा को पानी गार ||६||

मोरो गांव की माती, बन्या रस्ता गांव जोळं
रंग गंध जिनगी को, सोयरा संबंध गोळं ||७||

(०५.०५.२०२१)

५८. भरं से उदर

(ओवी)

पयली ओवी गाव को, मातीला नमन
रोजी रोटी जिनगी की, पूरावं से अनधन ||१||

दूसरी ओवी रक्षा करं, आखर को महाबीर
मातामाय की माया, हुळकीपर को ईठ्ठू मंदिर ||२||

तिसरी ओवी जंगलला, बादर को मनमोहन
हिवरी हिवरी धरतोरी, निर्भर सारो जीवन ||३||

चवथी ओवी गाव का, ओघर तरा बोड़ीला
तिरपत जीव जंतू ढोर, जंगल खेत बाड़ीला ||४||

पांचवी ओवी काजऱ्या, अना पापळया को जोड़ीला
जिन को मेहनतलका लोंबा, हिलगं से आखोड़ीला ||५||

छटवी मोरी ओवी, धन ढोरला खुट को
दूध की गंगालका, बनेव नसीब मोरो फुटको ||६||

सातवीं ओवी गाळो नांगर, इरा पावळा कुदर
खुपस्या पाय माती मा का, भरं से उदर ||७||

(०५.०५.२०२१)

५९. तिज (अक्षय तृतीया): परंपरा पोवार की

साडे तीन मुहूर्तमा, एक मुहूर्त तिज को
दान पूजन कर के, पुण्य कमावो निज को ॥१॥

जन्म परशुराम को, अना अन्नपूर्णा माया
सुटी पोहा की गठरी, वाच अक्षय तृतीया ॥२॥

सतयुग त्रेता युग, गंगा नदी अवतरं
शुभ कार्य बहु घड्या, तिज मुहुरत पर ॥३॥

तपा लगेव तपन, सूर्य ओकं ढसा ढसा
ठंडो करन बदन, भरो पानीलं करसा ॥४॥

पितृ पूजन कर के, चढे कागुर चवरी
पनो सेवई सारपो, तिरपत कायावरी ॥५॥

खेती किसानी का काम, सुरू होसे लाख्तखाळ
तिज मनाये पोवार, भरं से ढोला भदाळ ॥६॥

सोनो खरेदी वास्तूक, बाळी बेळो काळी फाटा
खरपळा किसानी को, खात, बादमा चिऱ्हाटा ॥७॥

असो तिज शुभ सन, परंपरा पोवार की
एक भेट लेसे बेटी, खुशी खुशी माहेर की॥८॥

(१६.०५.२०२१)

६०. रोवं से जी गावखारी

लगक्यारी गावला से, आसपास गावखारी
बारो मास उपजाऊ, निटवल कास्तकारी ||१||

गल्ली कोठा आंगन को, काळी कचरा पाचुळा
सेन मुत गायरान, भर जासे उरकुळा ||२||

गावकरीलाई याच, सालभर हगदोळी
जोडं लोंढा बारीस को, उफानं से तरा बोळी ||३||

बाळीमा का झाळ बेला, पळ्या पान फुल फळं
लोंढा संगं बोह्यक्यारी, गावखारीमाच सळं ||४||

गावखारी पर बनी, बेहेर को पानी गोड
पिवन को पानीलाई, सब मचावत होड ||५||

किसानला गावखारी, जसी सोनो की खद्यान
पिकं वाफा भाजीपालो, रबी खरीप कठान ||६||

सिरमिटलका बन्या, रस्ता मकान संडास
बोरवेल जागो जाग, ढोर बासरू को नास ||७||

पाय खालत्या आलेख, उर्वरकता को गयो
कस आंदीदून कमी, गाव जमीन को भयो ||८||

रसायन भऱ्या खात, नहीं हागनदारी भी
कम सेन अना लोंढा, सिरमीट, डांबरी भी ||९||

कट्या झाळ सनातनी, आया फुसक्या संकरी
आंदीवानी होनलाई, रोवं से जी गावखारी ||१०||
(२४.०५.२०२१)

६१. दिल गवाही दे नही भाऊ

खातो ठावमा छेद करनला दिल गवाही दे नही भाऊ
आपलोइनमा भेद करन ला दिल गवाही दे नही भाऊ ||धृ||

असल का से नकल का से एतरी अकल से भेजामा
शकल देख के बिकनोपर कसी ठंडक पड़े कलेजामा
गोलमटोल बातंइनको तुमी केतरो पयनो पैजामा
उपर उपर खेद करनला दिल गवाही दे नही भाऊ ||१||

जेको माथं नाव मिलेव अना जीवनला मिली से किंमत
वोनं समाज को ऋणी बनन की थोड़ीसी देखावो गनिमत
वरना करनो पड़े पदचेपी रय के कोंबड़ा घायी झिमत
समाज को अवच्छेद करनला दिल गवाही दे नही भाऊ ||२||

स्वार्थलाई संस्कृती को मोल भाव कर के बिक देवो?
स्वाभिमान बिक देवो तं मंग नवपिढ़ीला का सिक देवो?
जेकोलं से पयचान वैभव वा कसी धरोहर मौलिक देवो?
कारो काम सफेद कवनला दिल गवाही दे नही भाऊ ||३||

शूर वीर ज्ञानी पुरखां की प्रांत प्रांतमा छवी से फैली
पितर को पुढ़ो याचक बन के सोनो कसो फैलाये थैली?
खबरदार! छोटीसी गलती वा छवी ना कर जाये मैली
कुरआन को वेद करनला दिल गवाही दे नही भाऊ ||४||

खाल पंक्ती का संधीसाधू स्वारथ का सारा महारथी
हाथ ठेला देयेती ढकलन संबोध के तुमला सारथी
हात जोड़ के से बिनती यव वैभव नोको खोवो अकारथी
भंग सब की उमेद करनला दिल गवाही दे नही भाऊ ||५||
(३०.०७.२०२१)

६२. सपनमा आयी परी

काल रातवा आयेव सपन एक परी सुनावं आपबिती
वैभवशाली राज्य को रानी की सांगीस कशी भयी से दुर्गती ||१||

बेपरवाहीलं बिकट भयी प्यारी मुरत की जर्जर काया
झुर झुर के झुर्री पड़ गयी कसा बदहाल ये दिन आया ||२||

वानी की देवी शारदा की कृपा पोवार की अख्खी दारोमदार
समाजोत्थान की आधारस्तंभ भयी एकटी अना निराधार ||३||

येको राजमा भरभराटीमा भऱ्या रवत येका ढोली ढोला
दुध दहि को वान नही कभी खंडीभर जितरब खुटोला ||४||

नवो जमानो को चकाचौंधमा परी भयी अनदेखी बिचारी
पोवारी बोलन लज्जा आवं से 'का कहे आमला दुनियादारी?' ||५||

जागो पोवारो पयचान करो निज जीवन की या बुनियाद
पोवारी टिके तं पोवार टिके मायबोली की बढ़ावो तादाद ||६||

(०१.०८.२०२१)

६३. आचरन (वेवहार)

बोल भेलीघाई तोरा
उनला बिघड़ाऊ नोको
ज्यांहा आचरन खोटा
वहां पाय बढ़ाऊ नोको ||१||

तोंड परा बोल दे सच
लगे सबला घड़ीभर कड़ू
पर साखरबोलको पुढ़ं
नोको माथाला रगड़ू ||२||

धीर गंभीर बनके
कर गारी बी सहन
बड़बड़्या चुप होये
देखके तोरो आचरन ||३||

मान सम्मान मोठोला दे
नहानला बी कर प्यार
नवपिढ़ीला संस्कारी
करे तोरो वेवहार ||४||

(०८.०१.२०२२)

६४. कर सशक्त खुदला

काहाळ तेल पानी गोटामा खंद खंद
कर सशक्त खुदला कर खुदला बुलंद

कभी मिलेती रस्तालं काटा कभी चढ़ान
पिघलावनो पड़े कभी लोहा कभी चट्टान
खुद की हिंमत ना कभी होन देजो मंद ||१||

देख मुंगी भीतपर पड़ पड़ के चढ़ं से
बाज बी उलटो हवा को संग लढ़ं से
होसला को पंखलक उड़ाय तू स्वछंद ||२||

जमानो पाय खिचे भुलनो नहीं
आपरी वाहवाहीमा फुलनो नहीं
सोड़ रे तू सोड़ जमानो का लंद फंद ||३||

बदहाल दिन कर्मलक दिसेत बदलता
एक दिवस मिल के रहे तोला सफलता
मेहनतमा जीवन को से खरो आनंद ||४||

सत्य धर्म नितीलाई खुदला झोक दे
खोटी स्वार्थपरक राजनीती रोक दे
नाकमा दम कर यदि मिलेती जयचंद ||५||

मेहनत को पसीनालं लिख खुद को मुकद्दर
बंजर जमीन बी बने अमृत को समुंदर
पुरो होये सपना तोरो जो तोला पसंद ||६||

चलतो चल इंधारोमा उजारो कर आसान
पोवार को निशान की बनाव तू पयचान
जरनूक अना दुस्मन की बोलती कर बंद ||७||
(०६.०३.२०२२)

६५. दमड़ी: दुनिया की सरताज

जेकोलाई मानूस बिक देसे खुद चमड़ी
बनी सारो दुनिया की या सरताज दमड़ी

जेको कठं नाहाय काही दमड़ी 'ना ढेला
वोकोलाई गुरू बी बन जासे चाटू चेला
दमड़ीवालो नचावं से बंदर 'ना लोमड़ी ||१||

दमड़ी को मंघं मंघं सारो जग धाये
जेकी लाठी वोकीच भस कहलाये
जेको कठं दमड़ी वोकीच बजं तुमड़ी ||२||

दमड़ीलाई लालची की फौज लगं भलती
बलवानदून धनवान कीच जादा चलती
वोको पायी मानूस कटं से जसो कोंबडी ||३||

दमड़ीवालो इतरा से सजाय सजाय आंग
मोहताज को डोसका की बिखरीच भांग
चिपकेव मानूस जसो गोचड़ा 'ना चामड़ी ||४||

भेलीला लगं से जसी चाटा मुंगी माखी
दमड़ीवालो स्याहानो की चलं से चलाखी
बिना दमड़ी को मानूस लमड़ा लमड़ी ||५||

दमड़ीलं होयेत चाहे बड़ा बड़ा काम
बिस्तर मिलेपर खरिद सको का आराम?
मरेवपर सबलाच चार हात कमड़ी ||६||

दमड़ी बनावं से 'ना दमड़ी बिघाइं से
रोगराई देहामालं दमड़ी काहाळं से
महारोग हो चाहे डोस्का की घुमड़ी ॥७॥

(०७.०३.२०२२)

६६. मांगूसू जोगवा

मांगूसू जोगवा दे अंबा मातामाय को
तेव्हार चईत को, गरिब 'ना रईस को
सनातन हिंदू समुदाय को, जोगवा देssss ||धृ||

मोरो आंगनमा खुलो, गोमूत्रलका धुलो
तीन गोटा को चुल्हो, करेव तैयार चलो
खोलू अंदर को पल्लो, मार सके मन हहठिलो
अंबिका नाव कबूलो, होये सबकोच भलो,
सहारा सावली को, भवानी माऊली को
सड़ा सारवनला सेन गाय को, जोगवादेssss ||१||

पाच झड़ूला की काड़ी, चालीस घर की जुगाड़ी
कुविचार की धगाड़ी, फुले सुविचार बाड़ी
पाच घोड़ा की गाड़ी, पार करे गहरी खाड़ी
प्रेमरूप कीहकुल्हाड़ी, करे चूर चूर पहाड़ी
नौ रूप नौ दिवस का, पकवान नौ रस का
रोड़गा बने आदीमाय को, जोगवा देssss ||२||

बोध की आच उजरे, तावा पर भाव तरे
भेद दुहूर उदरे, दंभ हाय हाय करे
आशा तृष्णा बी मरे, बुद्धी विकार हरे
सद्भावना संचरे, संचित की खंडी भरे
शुद्ध होये आत्मा, से माय को हातमा
जोगवा समर्पन उपाय को, जोगवा देssss ||३||
(०४.०४.२०२२)

६७. सवाल

बेसक तुमरो करतियापर काई सवाल नाहाय
पर तुमला आपरोइनको काहे खयाल नाहाय? ||१||

नहान भया तं का भयेव पर आयी समजदारी
पुछेव गयेव सांगो सही कोनतो सवाल नाहाय? ||२||

रंगीत होती जिनगी बदरंग होय रही से
रकत बी आता आपरोइनको काहे लाल नाहाय? ||३||

मोहावं से दुसरो को गालपर की लाली हासी
मातामाय को झंडा काहे खुशहाल नाहाय? ||४||

आपरा बह्य रया सेत आसूइनकी धारमा
पोसन लायी वू पदर ना वा रूमाल नाहाय? ||५||

आंगन बी वूच से अना पांदन बी वाच से
पर पयले जसी तुमरी काहे चाल नाहाय? ||६||

सस्त्र की चमक होती दुस्मन को लायी काफी
आपरोइनलायीच आता काहे वा ढाल नाहाय? ||७||

कोनी जसो उंगलीपर नाचाये तं नाचनं का!
खुद को संगीत बाजा खुद को ताल नाहाय? ||८||

आखीर आसरा मिले आपरोच देहरीपर
दुसरो को घर मनजे माड़ी महाल नाहाय ||९||

आपरोच करे अस्थीला बिसरजन गंगामा
वोको बगैर मुक्त तत्व नरकंकाल नाहाय ||१०||
(११.०८.२०२२)

६८. अभिसेक सिंगोटीपर

सपना फलित होये कस्टाको कसोटीपर
अमृतलं करे देव अभिसेक सिंगोटीपर ||धृ||

तपालका चिखलवरी खांदापरा जुवाड़ी
उद्देस पनपे दुनिया जीवन की चले गाड़ी
बक्षिस मिली जागा कैलास को चोटीपर ||१||

मालीक मोरी मालीस करे तेल 'ना हरदकी
माया को हात पाठपर बिसात का दरद की
पकवान ढेप चोभरा लाडू मोहू रोटीपर ||२||

बेगड़ की नक्षी झूल की बासींग कपार तोरा
खोगीर झगमगातो आयेव तेव्हार पोरा
सजेव नवरदेव घोलर बांध गरगोटीपर ||३||

सयनाई ढोल आनीन पुढ़ोलं आरतीला
तोरन टंगाय बलक्या गावन लगेव झड़तीला
घर घर मिले पकवान आसिर्वाद पागोटीभर ||४||

बरात मारबत की दुसरो दिवस झुंझुरका
जायेती हकालेव रोग दुख जवर दुहूर का
देखनला अखाड़ा चल्या पावड़ी को फकोटीपर ||५||

उपकार महाकाल को वाहन का बहू सेती
सार्थक ना होय सकं कभी बईल बिना खेती
बरसाये पोरा आनंद सब जीव को कुळकोटीपर ||६||
(२२.०८.२०२२)

६९. कायलायी

आसान जिंदगी से तकरार कायलायी
दिलमा रहो हमेशा, दीवार कायलायी ||१||

साराच जीवजंतू, बिन जात धर्म जलम्या
मंग भेदभाव को यव, संसार कायलायी ||२||

पक्षी पिरेम को यव, गुमनाम लापता से
खोटो लबाड़ झूटो, दरबार कायलायी ||३||

काजक भयेव तोरो, वू कोख को बचन को
देयेस जो बचन लक इनकार कायलायी ||४||

सच्चो रईस बनजो नेकी कमायक्यारी
धोखा बदी कपट को बाजार कायलायी ||५||

(१२.०९.२०२२)

७०. ना खेत ना खलिहान मिलेव

ना खेत ना खलिहान मिलेव
बंजर सप्पा मैदान मिलेव ॥१॥

स्वाभिमानी तेल बिकतो
चापलुसइनला मान मिलेव ॥२॥

झूठ कुर्सीपर ताज पेहेरतो
सच ला बस अपमान मिलेव ॥३॥

चुपचाप हासे षड्यंत्री
अपलो मा अंजान मिलेव ॥४॥

ऊंची उड़ान सिखावनेवालो
जयचंद की संतान मिलेव ॥५॥

जजबात को खेल मा माहिर
खिलाड़ी पहेलवान मिलेव ॥६॥

शाही खजिना लूट लिजाईस
किल्ला को दरबान मिलेव ॥७॥

गागरा झोंक के डोरा फोड़े
सपनाइनला समशान मिलेव ॥८॥

मोरो घरं कब्जा करस्यारी
अनजानो मेहमान मिलेव ॥९॥

लूटी सभ्यता लूट गया रिश्ता
दिवालिया जहान मिलेव ॥१०॥

(१२.११.२०२२)

७१. मिठी बिश्वास की

याद से मोला वू बरसात को दिन
मी उदास, मोलाच बिसरेव
मोरोच आपलोइनकनलक
पर तोरो दृढविश्वास
मोरोपर, मोरो पिरेमपर
याद से मोला अजबी
तोरी वा मिठी, बिश्वास की
माया को माया अना ममता की
भर पानी मा ओलीगीद होयक्यार
मोरो डोईपर सहानुभूती को हात फिरायेस
मोरोपर अटूट बिश्वास, निर्मल पिरेम करेस
अना मी मोलाच सपड़ेव
मोरो नवो दुनियामा
तूच मोरी दूनिया
मोरी मायबोली, तूच मोरी दूनिया
मोरो अज से तोरोच कारनलक
देखू नोकोस लुकाय लुकाय
आव, साजरो करबीन जलमदिवस
तोरो वोनं बिश्वास को मिठी को

(०६.०१.२०२३)

७२. रंगमंच आयुष्य को: संचित का खेल

वर्तमान भूतकाळ, कथानक भविष्य को
देव खेलं भूमीपर, रंगमंच आयुष्य को ||१||

कर्म कर्तव्य सद्‌गुण, भाव प्रारब्ध नेपथ्य
येनं रंगमंच परा, नहीं काही पथ्यापथ्य ||२||

वोको हातमा कासरा, खेल खेलं से बाहुल्या
बुलावं से 'ना बोलं से, कोनी देखावं वाकुल्या ||३||

रस रंग रूप नाना, सारा संचित का खेल
एकपात्री नाटकमा, सुख दु:खकोच मेल ||४||

नाता गोता रंगकर्मी, कई कईक मुखड़ा
तीन अंकमा दिसेती, सुख दुख का रूपड़ा ||५||

कभी नायकी चेहरा, कभी खलनायकी को
कभी चरित्र भूमिका, कर्म रूप लायकी को ||६||

यहां आपून दर्शक, खुद्‌द विद्‌यार्थी शिक्षक
मुल्यांकन करणारो, वोरत्या से समिक्षक ||७||

आयुष्य को मंचपर, होसे रंगीत तालीम
येनं श्वास को कजाने, पड़े परदा जालीम ||८||

निभावनो हरेकनं, आपापलो किरदार
नाव रहे चिरकाल, सुविख्यात यादगार ||९||

(२८.०४.२०२३)

७३. गाव काकाच भलो

सब संग चलुसू मी येनं भीडमाच एकलो
भलो मुंदो आपलो मी गावकाकाच भलो ||धृ||

कोनी काही करं वोला कोसन को कायला?
फुकट परायो माल ढोसन को कायला?
फुकटमा कोनीला परोसन को कायला?
निठल्ली जिनगी सोसन को कायला?
दुसरो को भरुसोपर काहे हात मलो?
भलो मुंदो आपलो मी गावकाकाच भलो ||१||

राजनिती करनेवाला करत राजकारन
नहीं जाव मी उन को संग जवानीला मारन
बिपदा मा नेता लोक नहीं आवत तारन
मंग काहे जाऊ आपली कमाई सारन?
फालतू को कामलाई नाहाव मी निठल्लो
भलो मुंदो आपलो मी गावकाकाच भलो ||२||

मोरो कष्टा की या कास्तकारीच भली
याच मोरो परिवार अना माय बाप असली
देसे मोला दाना पानी जितरबला खल्ली
बुढापो को अधार अना टेकनला बल्ली
येकोमाच जनम मरन अगलो अना पिछलो
भलो मुंदो आपलो मी गावकाकाच भलो ||३||

अगर सेकत रहेत कोनी आपापली रोटी
काय को यव जतन या तं संस्कृतीच खोटी!
"सब मानव एक" याच सोच मोरी मोठी
करनीदुन कथनीकीच सवुक सबला मोठी
असो खोटो लोकइन को काहे पडू पल्लो?
भलो मुंदो आपलो मी गावकाकाच भलो ||४||

(२३.०६.२०२१)

७४. राजाराम सीताराम

घट घटमा कन कनमा श्वास श्वासमा मालिक राम...
राजाराम सीताराम
करूणामयी सीतामाई का पुरूषोत्तम श्रीराम,
राजाराम सीताराम ॥धृ॥

सीता त्याग की मुर्ती राम को सत्य भक्ती कर्म
पतिव्रता सीता, राम को एक पत्नी धर्म
सत्य आचरन सेवा भक्तिमा जीवन बितेव तमाम...
राजाराम सीताराम ॥१॥

राम रूप सीता सीता रूप रघुनाथ की साया
दुही आतम ज्योती मिली एक भई रघुराया
सीताराम को नाम स्मरनमा जीवन का सुखधाम...
राजाराम सीताराम ॥२॥

जनकसुता भरतार कौशल्यासूत दशरथनंदन
जनता को आदर्श जनार्दन रघुकूल को भुषन
मर्यादा की उत्तम मुर्ती जनसेवा निष्काम...
राजाराम सीताराम ॥३॥

वनमा सीताला मोहिस मारिचनं आतताई
छद्म भेष लंकेश रावननं हरिस सीतामाई
सीता को सत देखकन रावन याद करं परिनाम...
राजाराम सीताराम ॥४॥

वानरसेना संग रामनं करीस रावन को वध
शंखनाद उत्सव हर्षमा आनंदीत अवध
मी नतमस्तक तोरो चरनमा हे शांताकारम...
राजाराम सीताराम ॥५॥

राजा भोज पोवार विक्रमादित्य अग्निवंशी
आंधि का परमार रामवंश का सुर्यवंशी
अखिल पोवार को कुलदैवत तोला कोटी कोटी प्रनाम...
राजाराम सीताराम ॥६॥

सीता को एक रूप कुलदेवी माय गड़कालिका
आद्य देवताद्वय तुमी येनं पोवार जातीका
तोरो दर का आमी 'प्रहरी' तूच आमरो मुकाम...
राजाराम सीताराम ॥७॥

(०१.११.२०२०)

कवि परिचय

नांव :- डॉ. प्रल्हाद रघुनाथ हरिणखेडे "प्रहरी"
जनम तारीख :- दि.०७.०२.१९७४
शिक्षण :- एम. एससी., बी. एड., एम. फिल.,
पी. एचडी. (प्राणीशास्त्र)
व्यवसाय :- महाराष्ट्र शासन को उच्च व तंत्र शिक्षण
विभाग मा राजपत्रित अधिव्याख्याता
भ्रमणध्वनी क्र :- ९८६९९९३९०७, ९३०७७१८४८५
मुल पत्ता :- सुखदेवटोली (डोंगरगांव) तह. जिल्हा गोंदिया (महाराष्ट्र)
स्थानिक पत्ता :- ३०५, साई ऑरा, प्लॉट क्र. ३३, सेक्टर-१७,
उलवे, नवी मुंबई- ४१०२०६
ईमेल :- rushu.pr२४@gmail.com

साहित्यिक कृती/ उपलब्धी:-

- पोवारी, मराठी अना हिंदीमा गद्य पद्य लेखन
- सामाजिक पत्रिका, साझा संग्रहइनमा लेखन प्रकाशित
- हिंदी/ मराठीमा 'स्वर संस्कृती' अना 'अबोली' नामक गीत संग्रह अना 'प्रीती प्रेम' नामक नाटक संग्रह
- पोवारी साहित्य कला संस्कृती मंडल द्वारा 'कवीरत्न' सम्मान
- उपाध्यक्ष: पोवारी साहित्य सामाजिक उत्कर्ष संस्था
- मराठी भाषा प्रमुख: जीवन गौरव साहित्य परिवार महाराष्ट्र राज्य
- अध्यक्ष: युवा उत्थान समिती, अखिल भारतीय क्षत्रिय पोवार (पंवार) महासंघ भारत
- कार्यकारिणी सदस्य: अखिल भारतीय क्षत्रिय पोवार (पंवार) महासंघ भारत

परी पोवारी (काव्यसंग्रह)
प्रकाशक:- इंजी. गोवर्धन बिसेन
फोन: +९१ ९४२२८३२९४१
मुल्य : ₹१८५/-

Pari Powari (Collection of Poems)
9 789334 004762